Moral Science

The Copmlete Book of Jainism for Children

हमारी आस्था के केन्द्र

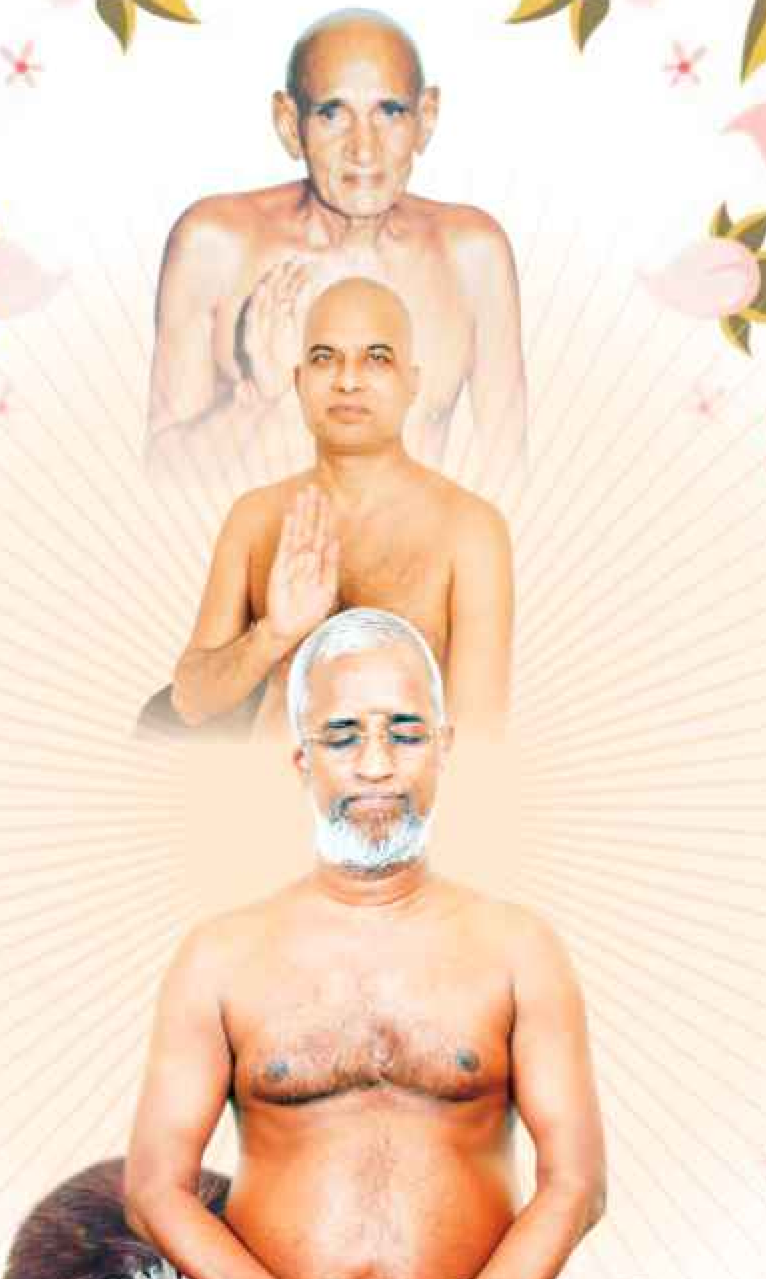

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर निमित्तज्ञानी 108 आचार्य श्री विमलसागर जी महामुनिराज

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

Moral Science

The Copmlete Book of Jainism for Children

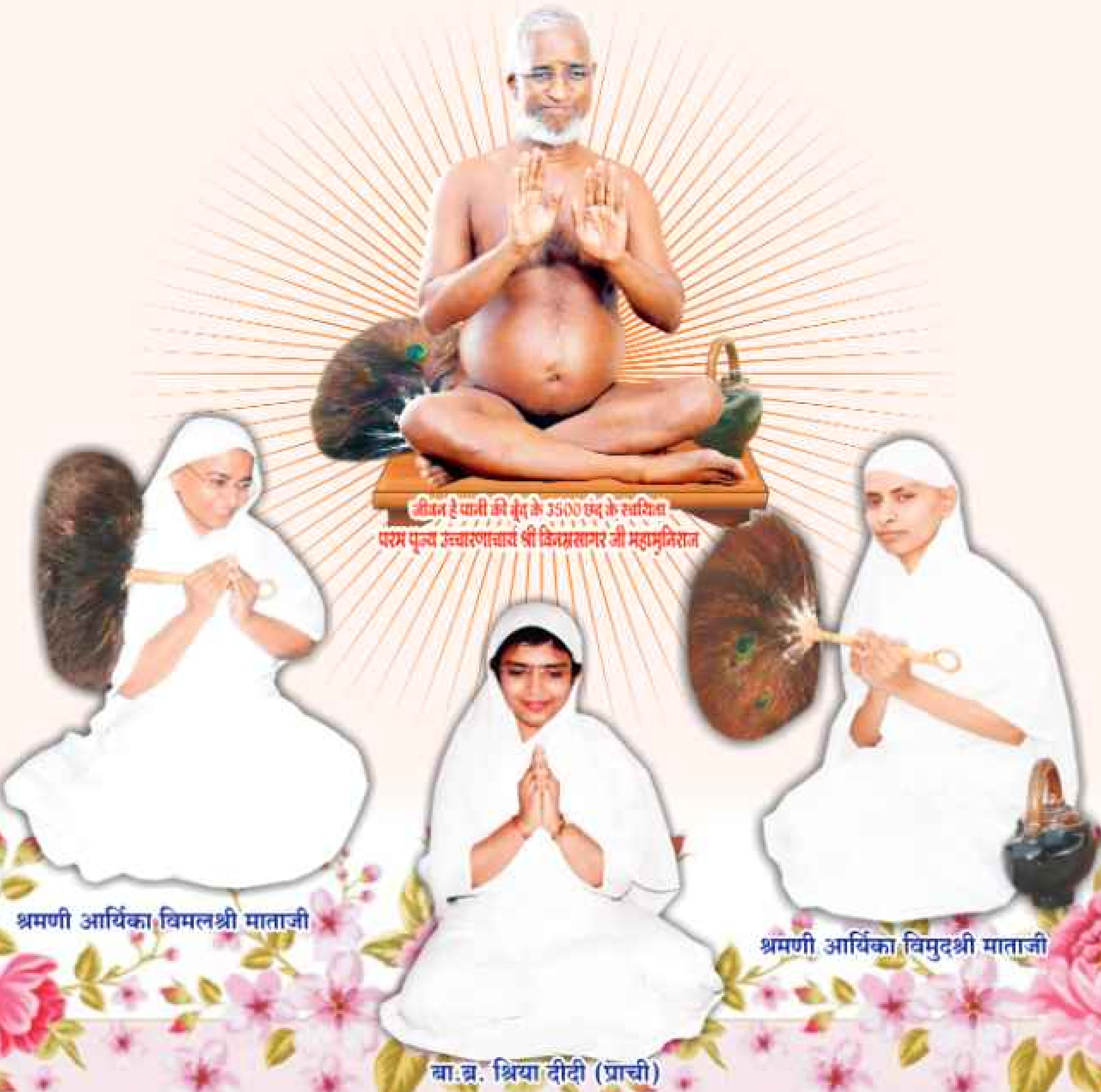

पुण्यार्जक परिवार

श्री राजेश कुमार जी–श्रीमती ममता जैन, विपुल कुमार जैन
बा.ब्र. शुभी दीदी, बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी एवं समस्त भंडारी परिवार, आगरा

कृति– "MORAL SCIENCE"

शुभाशीष – परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज
परम पूज्य उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

प्रेरणा – श्रमणी आर्यिका 105 विमलश्री माताजी
श्रमणी आर्यिका 105 विमुदश्री माताजी

प्रस्तुति – बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी

प्रकाशक – वीतराग श्रमण श्रुत संवर्धन ट्रस्ट

प्राप्ति स्थान – * वीतराग श्रमण श्रुत ग्रंथालय, भिण्ड (म.प्र.)
* सीपुर समता तीर्थ, सीपुर, सलुम्बर (राज.) मो. 09828613614
* धर्मप्रभावना न्यास, भिण्ड मो. 09826801542
* देवेन्द्र जैन, बीना (म.प्र.) मो. 07580223344

पुन: प्रकाशन हेतु सहयोग आपेक्षित है।

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर
मो. 8290526049, 8619727900 jyotigraphics84@gmail.com

विनम्र देशना चैनल
You Tube
Subscribe
Shankar Bhaiya
Vinamra Deshna Parivar

जीवन है पानी की बूंद के 3500 छंद के रचयिता
परम पूज्य उत्सारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

शुभाशीष वचन

अच्छे संस्कार की धरा पर अच्छी किस्मत की फसल लगती है जिसमें अच्छे फल की उपलब्धि होती है वयस्क होने के पहले जो संस्कार हमें माता–पिता से, परिवार के परिवेश से या मित्रों की संगति से प्राप्त होते हैं वे हमारी जिंदगी के लिए नींव का पत्थर बनते हैं इन्हीं सस्कारों पर हमारा सम्पूर्ण जीवन आधारित होता है ये प्रारंभिक संस्कार ही जीवन को दिशा देकर दशा निर्धारित करते हैं। आठ वर्ष के संस्कार ही अस्सी वर्ष तक कायम रहते हैं जैसे माँ के दूध की ताकत पूरी जिंदगी तक काम करती है वैसे ही बचपन के संस्कार पचपन तक ही नहीं पिचत्तर तक काम करते हैं। बच्चों में शुरुआत में ही अच्छे धार्मिक, व्यावहारिक एवं नैतिक संस्कार दिये जायें वे बच्चे परिवार का ही नाम रौशन नहीं करते, बल्कि नगर, राज्य और देश को सम्मानित करते हैं। संस्कार सिर्फ संस्कार ही नहीं, हमारी भविष्य की किस्मत के निर्माता हैं। जिन बच्चों में धार्मिक संस्कार नहीं मिल पाते वे बड़े होकर किस्मत नहीं बनाते, वे किस्मत का खाते हैं उनका जीवन धर्महीन पाप कार्यों से लबालब भरा होता है, उनका खानपान बहुत ही निम्न स्तर का होता है। उनकी बुद्धि भी श्रेष्ठ विचारों से युक्त नहीं होती उनका व्यवहार भी कुशल नहीं होता ऐसे लोग स्वार्थी होते हैं दया नाम की कोई चीज उनके जीवन में नहीं होती।

खानपान से खानदान की पहचान होती है जैसे भाषा से, वाणी से, व्यक्ति के अध्ययन व व्यक्तित्व की पहचान हो जाती है वैसे ही संस्कार से व्यक्ति के परिवार व माता–पिता की पहचान हो जाती है।

प्रारंभ में श्रेष्ठ संस्कार बच्चों में कैसे दिये जायें, कहाँ दिये जायें, किसके द्वारा दिये जायें इन बातों का ध्यान रखते हुए हमारे संघ की उम्र में सबसे छोटी दीदी बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी ने अपने प्रशंसनीय प्रयास से बाल संस्कार हेतु **"MORAL SCIENCE" The Complete Book of Jainism for Children** जिसकी प्रेरणा श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी एवं श्रमणीआर्यिका विमुदश्री माताजी के सहयोग से पुस्तक की रचना की है। यह पुस्तक अपने आप में अन्य पुस्तकों से अनूठी है इसमें अंग्रेजी के माध्यम से भी बच्चों को धर्म समझाया गया है। माताजी व दीदी ने अथक प्रयास से इस कार्य को सफलता प्रदान की है। यह पुस्तक बाल संस्कार हेतु बहुत उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा मेरा मानना है।

इस हेतु माताजी व दीदी को मेरा बहुत–बहुत आशीर्वाद है वे अपने लक्ष्य व साधना में सदैव संलग्न रहते हुए अपने संस्कारों को दृढ़ करें।

शुभाशीष
आचार्य विनम्रसागर

प्रशस्त भावना

तर्क, बुद्धि, विचार, दर्शन इत्यादि सब महत्वपूर्ण मानसिक व्यापार हैं, किन्तु इन सबमें संस्कार (भावना) का पद श्रेष्ठतम है। संस्कार बुद्धि पर राज्य किया करते हैं।

सत् संस्कार अंधों को आँखें, लंगड़ों को टाँगें, पंगु को हाथ, अनाथों को साथ बन जाया करते हैं। जिस प्रकार डाली से टूटा हुआ फूल दुबारा नहीं लग सकता वैसे ही बचपन में बच्चों में सुसंस्कार नहीं मिल पायें तो आदर्श जीवन का महल मजबूत नहीं हो सकता।

आज के इस भौतिकता प्रतिस्पर्धा के युग में बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, पॉयलट आदि की शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक संस्कार देना भी अति आवश्यक है कि बेटा घर जब भी लौटकर आये बेटा बनकर आये इंजीनियर या डॉक्टर बनकर नहीं क्योंकि पूज्य गुरुदेव कहते हैं हर चीज कॉपी (Copy) की जा सकती है पर संस्कार कॉपी नहीं किए जा सकते। बड़ों कि शिक्षा सदा अपने हित का हिस्सा होती है।

ऐसी ही हितकारी शिक्षा और संस्कारों से सजकर पूज्य गुरुदेव के संघ की छोटी सी दीदी बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी ने **"MORAL SCIENCE" The Complete Book of Jainism for Children** का सृजन कर इस छोटी सी वय में बच्चों में सुसंस्कारों का बीजारोपण, जिनवाणी की सेवा और बच्चों में जैनत्व की दृढ़ता लाने का सार्थक प्रयास किया है साथ ही श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माताजी ने भी अपना सहयोग प्रदान कर दीदी को संबल प्रदान कर इस कृति को आप सभी के समक्ष परोसा है।

पूज्य गुरुदेव कहते हैं-

जितना भी कर जाओगे, उतना ही फल पाओगे
किए बिना नहीं मिलता है-ऽऽ
करनी जो कर जाओगे, वैसा ही फल पाओगे
नीम के तरु में हो-3 नहिं आम दिखायें रे।

जैसा बीज बोया जाता है, फल भी वैसे ही प्राप्त होते हैं। अत: मेरा आपसे यही कहना है कि हे पालको! अपने बालकों को इस पुस्तक का रसास्वादन कराकर उनके जीवन में सुसंस्कारों की नींव को मजबूत करायें जिससे जैनत्व से अनभिज्ञ बालकों में एक नई चेतना का संचार हो, संस्कारों का आधार हो।

अंत में यह कृति जन-जन को संस्कार प्रदायिनी बने,
इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

समर्पण के स्वर

Jainism does not worship a person, but a personality. जैन धर्म व्यक्ति की नहीं व्यक्तित्व की पूजा करने की प्रेरणा देता है। आज सारा विश्व संस्कार (वाणी) के बल पर संचालित होता है, यह अकाट्य सत्य है।

संस्कार संस्कृति के परिचायक हैं। हमारे देश की संस्कृति विश्व की सर्वोत्कृष्ट संस्कृति है। जिसकी नींव है सुसंस्कार। हमारे यहाँ जब कोई बालक गर्भ में आता है तो संस्कारित माता–पिता उसे गर्भ से ही संस्कार प्रदान करते हैं क्योंकि संस्कार दिए बिना सुविधाएँ देना पतन का कारण हैं।

नवजात बालक की प्रथम पाठशाला परिवार है और उस परिवार में यदि संस्कारों में हीनाधिकता हो तो संस्कृति लड़खड़ा जाती है क्योंकि अकाल अगर अनाज का हो तो मानव मरता है किन्तु अकाल संस्कारों का हो तो 'मानवता' मरती है। केवल **Degree** और पैसा शांति को प्रदान नहीं करता अपितु संस्कारों से ही शांति मिलती है।

जो सुसंस्कार बचपन में माता–पिता से मिले और पुण्य योग से सुसंस्कार प्रदाता पूज्य आचार्य भगवन ने मुझ अदना सी बालिका को अपने आशीष की छत्र–छाया में रख सुसंस्कार दिए उन संस्कारों ने ही ''श्रिया को श्रेय'' का मार्ग दिखाया व पल पल श्रमणी आर्यिका 105 विमलश्री माताजी की वात्सल्यमयी प्रेरणा से व कुशल मार्गदर्शन के द्वारा और श्रमणी आर्यिका 105 विमुदश्री माताजी के प्रोत्सहन व सहयोग से हमने इस **"MORAL SCIENCE" The Complete Book of Jainism for Children** का सृजन किया।

कहते हैं उमंग और उत्साह कार्य को गति देते हैं, विनय और भक्ति श्रेष्ठमति को देते हैं, ईश्वर की इबादत और संयम हमें साहस देते हैं लेकिन गुरु का अशीष शक्ति, साहस, उमंग, उत्साह सबसे ही भर देते हैं।

ऐसे मम श्रद्धालय के देवता, मम हृदय कमल सम्राट, सुसंस्कार प्रदाता उच्चारणाचार्य भगवन के 58वें अवतरण दिवस पर मैं अल्पज्ञ गुरुदेव के पावन श्रीचरणों में त्रय भक्ति पूर्वक विनम्र नमोऽस्तु प्रेषित कर यह कृति समर्पित करती हूँ।

बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी

कहाँ क्या है?

1.	प्रार्थना (हमको है प्राणों से प्यारा)	(आचार्य श्री विनम्रसागर जी)	1
2.	गुरु वंदना (हमें भगवान मिल गये)	(आचार्य श्री विनम्रसागर जी)	2
3.	प्रात:कालीन वंदना (धीरे धीरे चलो जी मंदिर)	(आचार्य श्री विनम्रसागर जी)	3
4.	सम्यक् ''दर्शन'' विधि	(आचार्य श्री विनम्रसागर जी)	4
पाठ-1	पंच परमेष्ठी	(आचार्य श्री विनम्रसागर जी)	5
पाठ-2	मंगल	(आचार्य श्री विनम्रसागर जी)	8
पाठ-3	अक्षर ज्ञान	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	10
पाठ-4	English Alphabets	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	11
पाठ-5	अंक ज्ञान	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	14
पाठ-6	जीव-अजीव/चेतन-अचेतन	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	15
पाठ-7	इन्द्रियाँ	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	16
पाठ-8	पाप	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	18
पाठ-9	कषाय	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	20
पाठ-10	गति	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	22
	भाग-2		
पाठ-1	श्रावक के मूलगुण	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	24
पाठ-2	सप्त व्यसन	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	26
पाठ-3	तीर्थंकर	(बा.ब्र. श्रिया दीदी)	28
पाठ-4	24 तीर्थंकर परिचय	(श्रमणी आर्यिका विमुदश्री)	30
पाठ-5	तीर्थंकर विशेषताएँ	(श्रमणी आर्यिका विमुदश्री)	79
5.	अर्घावली		83
6.	उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज की पूजन		84

प्रार्थना

उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

हमको है प्राणों से प्यारा
जय हो जय जिनधर्म हमारा।

सूर्योदय के पूर्व उठेंगे,
णमोकार का जाप करेंगे।
मात-पिता के चरण छुयेंगे।
फिर मंदिर में दर्श करेंगे।।
प्रभु दर्शन है एक सहारा-जय हो जय...

छना हुआ जल ग्रहण करेंगे,
प्रभु का दर्शन रोज करेंगे।
रात्रि भोजन नहीं करेंगे,
गुरुओं के गुणगान करेंगे।।
वीतरागमय धर्म है न्यारा-जय हो जय...

परमेष्ठी प्रभु तारन हारे,
भव सागर में हैं उजियारे।
महिमा जिनकी सब जन गाते,
हम सब उनको शीश झुकाते।।
मिले धर्म से जगत किनारा-जय हो जय...

कुत्ता सुनकर देव हुआ था,
सुना बैल ने इन्द्र हुआ था।
अग्निकुण्ड जलकुण्ड हुआ था,
चोर यहाँ भगवान हुआ था।।
णमोकार में शक्ति अपारा-जय हो जय...

सात तत्त्व स्वीकार करेंगे,
नव पदार्थ का ज्ञान करेंगे।
दया भाव हम हृदय धरेंगे,
जिनवर पूजा रोज करेंगे।।
प्रभु भक्ति ने सबको तारा-जय हो जय...

गुरु वंदना

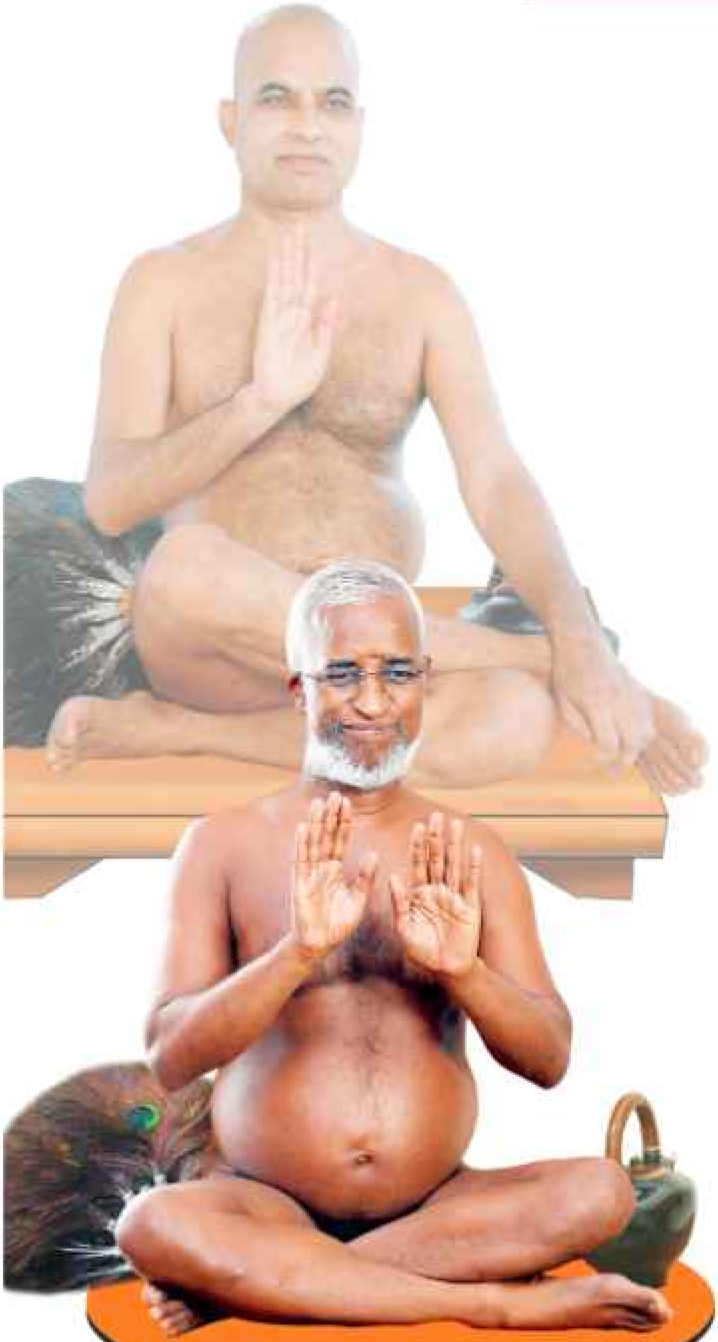

हमें भगवान मिल गये

उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

गुरुवर क्या मिल गये हमें भगवान मिल गये
उजड़े हुए गुलशन को बागवान मिल गये

तुम ही हो मेरे रास्ता अंतिम मुकाम के
तुम दे रहे हो सबको लक्ष्य मोक्षधाम के
गुरु के चरण क्या मिल गये गुणधाम मिल गये
उजड़े हुए...

सब राग द्वेष तज के जो विराग हो गये
नापाक छोड़ करके आप पाक हो गये
गुरु बोल मिल गये क्या—ऽऽ शिवराम मिल गये
उजड़े हुए...

हर राह पे गुरु ने हमें मंजिल दिखाई है
गुरु की नजर से हमने सत्य ज्योति पाई है
ज्योति क्या मिल गई हमें हम खुद ही जल गये
उजड़े हुए...

गुरु के चरण में रह के हम शिवराह पायेंगे
उनको रखेंगे उर में और गुणधाम जायेंगे
गुरुवर से हम मिले क्या हम खुद से ही मिल गये
उजड़े हुए...

तुभ्यं नमः सहज भाव स्वभावकाय,
तुभ्यं नमः दृग चरित्र विकासकाय।
तुभ्यं नमः सकल पाप विनाशनाय,
तुभ्यं नमो गुरु ''विनम्र'' हितंकराय।।

प्रात:कालीन वंदना

धीरे धीरे चलो जी मंदिर, भगवन के गुणगाने को।
बढ़ते चलो हजारों लोगों, वीतरागता पाने को।।टेक।।

घर से मेरे भाव बने मैं, मन्दिर जी में जाऊँगा-2
शांतिनाथ के दर्शन करके, मन ही मन हर्षाऊँगा-2
पार्श्वनाथ के दर्शन करता-2, पाप अनन्त मिटाने को।।
बढ़ते चलो...

भक्ति भाव से दर्शन करके, कूप से जल भर लाऊँगा-2
दोनों हाथ में कलश को लेकर, भगवन को नहलाऊँगा-2
ऐसा भव्य जीव ही करते-2 अपने दु:ख मिटाने को-22।।
बढ़ते चलो...

थाल में अष्ट दरब को लेकर, पूजन विधि को रचाऊँगा-2
भगवन के गुण पाने को मैं, पूजन में गुण गाऊँगा-2
देव-शास्त्र-गुरु पूजन करता-2 रत्नत्रय गुण पाने को।।3।।
बढ़ते चलो...

हे प्रभु! आप तो केवलज्ञानी, तीनों लोक विजेता हो-2
हे प्रभु! आप तो सिद्ध स्वरूपी, मुक्तिपथ के नेता हो-2
मेरा मुझसे मिलन करो दो, मंजिल अपनी पाने को।।4।।
बढ़ते चलो...

हे प्रभु! चरण कमल द्वय तेरे, मेरे हृदय रहें पल-पल-2
मुक्ति न पालूँ तब तक भगवन् कर दूँ नाश करम दल-मल-2
सम्यक् बोध खिला दो उर में, मरण समाधि पाने को।।5।।
बढ़ते चलो...

(गुरुदेव द्वारा रचित भक्तिभरा गीत)
प्रथम रचना-1989

Don't be proud - but be pride off.

सम्यक् "दर्शन" विधि

दर्शन विधि–

- सर्वप्रथम प्रात:काल की बेला में उठकर स्नानादि कार्यों से निवृत्त हो शुद्ध धुले हुए वस्त्र पहिनकर चावलादि शुद्ध अष्ट मंगल द्रव्य लेकर, नीचे भूमि को देखते हुए श्री जिनमंदिर जाना चाहिए।
- जिन दर्शन के अलावा कोई अन्य विचार नहीं आना चाहिए। दर्शन का भजन बोलते हुए चलना चाहिए।
- प्रसन्न मन एवं अहो भाव से भरकर मंदिर जाना चाहिए।
- मंदिर के दरवाजे पर पहुँचते ही सर्वप्रथम छने जल से पैर धोना चाहिए।
- मंदिर में प्रवेश करने से पहले तीन बार नि:सही नि:सही नि:सही का उच्चारी करते हुए प्रवेश करना चाहिए।
- पश्चात् घंटे को बजाकर ॐकार की ध्वनि से मन को शांत करना चाहिए।
- जिनेन्द्र देव के समक्ष थोड़ा साइड होकर खडे होना चाहिए और कम से कम तीन मिनिट तक भगवान को एकटक देखनाचाहिए।
- पुन: दर्शन स्तुति पढ़ते हुए तीन प्रदक्षिणा देकर विनयपूर्वक पाँच ढेरी चावल चढ़ाकर गवासन से बैठकर भगवान को नमस्कार करना चाहिए।
- आज मेरे दोनों नेत्र सफल हो गये मेरा जन्म सफल हो गया ऐसा पवित्र भाव मन में लाना चाहिए।
- गंधोदक वंदन करके उत्तमांग (ललाट) पर लगाना चाहिए। निम्न श्लोक पढ़ना चाहिए।

निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गन्धोदकं वंदे, अष्ट कर्म विनाशनम्।।
निर्मल से निर्मल अति, अघनाशक सुखशील।
वंदों जिन अभिषेक कृत यह गंधोदक नीर ।।

जिनश्रुत दर्शन विधि–

- पुन: अन्य वेदियों के दर्शन करें, शास्त्र जी जहाँ विराजमान है वहाँ चार ढेरी पुंज चढ़ाकर दर्शन करने चाहिए।
- प्रथम करणं चरणं द्रव्यं नम: अर्थात् प्रथमानुयोग, चरणानुयोक, द्रव्यानुयोग को नमस्कार हो।

सम्यक् गुरु दर्शन–

जहाँ पर निर्ग्रंथ गुरु विराजमान हैं वहाँ पहुँचकर हाथ जोड़कर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नम: अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र को नमस्कार हो ऐसा भाव बना कर तीन ढेरी से पुंज चढ़ाकर गवासन में बैठकर विनयपूर्वक नमस्कार करना चाहिए। यदि समय है तो मन ही मन में गुरु वंदना पढ़ना चाहिए। पुन: नमस्कार करके ''भूयात पुनर्दर्शनम्'' की भावना करते हुए बाहर निकलना चाहिए।

मंदिर जी से लौटते समय अस्सही अस्सही अस्सही बोलकर निकलना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न :–

1. मंदिर के दरवाजे पर पहुँचकर क्या करना चाहिए?
2. जिनेन्द्र भगवान के सामने कितनी ढेरी पुंज चढ़ाना चाहिए?
3. गंधोदक वंदन का श्लोक सुनाइए?
4. भगवान को नमस्कार कैसे करना चाहिए?
5. दर्शन करके बाहर निकलते समय क्या भावना भानी चाहिए?

पंच परमेष्ठी

पाठ-1

णमो अरिहंताणं

I bow to all Arihantas.
(सभी अरिहंतों को नमस्कार हो)

णमो सिद्धाणं

I bow to all Siddhas.
(सभी सिद्धों को नमस्कार हो)

णमो आयरियाणं

I bow to all Acharyas.
(सभी आचार्यों को नमस्कार हो)

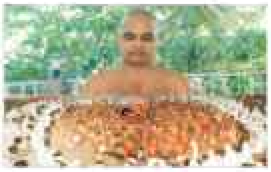

णमो उवज्झायाणं

I bow to all Upadhyayas.
(सभी उपाध्यायों को नमस्कार हो)

णमो लोए सव्वसाहूणं

I bow to all Saints in the World.
(लोक के सभी साधुओं को नमस्कार हो)

एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मंगलम्।।

This Namokar mantra is about to distroy all sins.
And the first is auspicious, in the all auspicious.
यह णमोकार मंत्र सभी पापों को नष्ट करने वाला है तथा सभी मंगलों में प्रथम मंगल है।

Word meanings :-

I = मैं, Bow to = नमस्कार करता हूँ, All = सभी, Arihantas = अरिहंतों को, Siddhas = सिद्धों को, Acharyas = आचार्यों को, Upadhyayas = उपाध्यायों को, Saints = साधुओं को, In the world = लोक में (लोक के), This = यह, Namokar mantra= णमोकार मंत्र, is about = करने वाला है, All = सभी, Sins =पापों को, Distroy = नष्ट, and = और, auspicious = मंगलों में, First = प्रथम, All = सभी

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – णमोकार मंत्र किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस मंत्र में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है, उसे णमोकार मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 2. – णमोकार मंत्र की रचना किसके द्वारा हुई?

उत्तर – णमोकार मंत्र किसी के द्वारा नहीं रचा गया। यह अनादि काल से है, इस मंत्र को इस युग में सर्वप्रथम प.पू. पुष्पदंत, भूतबली आचार्य ने षट्खण्डागम ग्रंथ में मंगलाचरण के रूप में लिपिबद्ध किया था।

प्रश्न 3. – णमोकार मंत्र में कितने पद, कितने अक्षर व कितनी मात्राएँ होती हैं?

उत्तर – णमोमार मंत्र में 5 पद, 35 अक्षर व 58 मात्राएँ होती हैं।

प्रश्न 4. – णमोकार मंत्र के श्रद्धान से किसको क्या–क्या फल दिया?

उत्तर – णमोकार मंत्र के श्रद्धान से अंजन चोर को मोक्ष व नाग–नागिन, कुत्ता, बकरा, तोता, बैल आदि को देवगति प्राप्त हुई।

प्रश्न 5. – णमोकार मंत्र के अश्रद्धान से क्या हानि हुई?

उत्तर – सुभीम चक्रवर्ती, मरकर नरक गति को प्राप्त हुआ।

प्रश्न 6. – परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो परम श्रेष्ठ पद में स्थित होते हैं, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 7. – परमेष्ठी कितने होते हैं, और कौन–कौन से हैं?

उत्तर – परमेष्ठी पाँच होते हैं।

1. अरिहंत परमेष्ठी,
2. सिद्ध परमेष्ठी,
3. आचार्य परमेष्ठी,
4. उपाध्याय परमेष्ठी,
5. साधु परमेष्ठी

प्रश्न 8. – अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन्होंने चार घातिया कर्मों का नाश कर, अनंत चतुष्टय को प्राप्त कर लिया, जो जन्म–मरण से रहित हैं उन्हें "अरिहंत परमेष्ठी" कहते हैं।

प्रश्न 9. – सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो जन्म–मरण से रहित हैं, जिन्होंने आठ कर्मों को नाश कर आठ गुणों को प्राप्त किया है, वे "सिद्ध परमेष्ठी" कहलाते हैं

प्रश्न 10. – आचार्य परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो पंचाचार का पालन स्वयं करते हैं और शिष्यों से करवाते हैं, दीक्षा, शिक्षा तथा शिष्यों के निग्रह में कुशील होते हैं, वे "आचार्य परमेष्ठी" कहलाते हैं।

प्रश्न 11. – उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो स्वयं पढ़ते हैं एवं अन्य मुनियों को पढ़ाते हैं, उन्हें "उपाध्याय परमेष्ठी" कहते हैं।

प्रश्न 12. – साधु परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो मुनि ज्ञान–ध्यान–तप में लीन रहते हैं, आरम्भ परिग्रह से मुक्त हैं, तथा जो विषयों की आशा से रहित होते हैं, उन्हें साधु परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 13. – पंच परमेष्ठियों के मूलगुण कितने होते हैं ?

उत्तर –

अरिहंत परमेष्ठी	– 46
सिद्ध परमेष्ठी	– 8
आचार्य परमेष्ठी	– 36
उपाध्याय परमेष्ठी	– 25
साधु परमेष्ठी	– 28
	143

प्रश्न 14. – सबसे बड़े परमेष्ठी कौन हैं और क्यों ?

उत्तर – सिद्ध परमेष्ठी सबसे बड़े परमेष्ठी हैं, क्यों उनके सम्पूर्ण कर्मों का नाश हो गया है।

प्रश्न 15. – अरिहंत परमेष्ठी को प्रथम नमस्कार क्यों किया गया है ?

उत्तर – क्योंकि अरिहंत परमेष्ठी हम सभी को कल्याण मार्ग का उपदेश देते हैं, इसलिए अरिहंत परमेष्ठी को प्रथम नमस्कार किया जाता है।

मिलान कीजिए –

❊	णमोकार मंत्र अक्षर	मुनि (साधु)
	परमेष्ठी	35
	आचार्य	सिद्ध
	बड़े परमेष्ठी	5
	28	36

पाठ-2

मंगल

चत्तारि मंगलं
The four auspicious are in the world.
(लोक में चार मंगल होते हैं।)

अरिहंता मंगलं
All Arihantas are ausipicious.
(सभी अरिहंत मंगल हैं।)

सिद्ध मंगलं
All Siddhas are auspicious.
(सभी सिद्ध मंगल हैं।)

साहू मंगलं
All Saints are auspicious
(सभी साधु मंगल हैं।)

केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं
Said by god are auspicious
(केवली भगवान के द्वारा कहा धर्म मंगल है।)

चत्तारि लोगुत्तमा
The Four are the best in the world
(लोक में चार उत्तम हैं)

अरिहंत लोगुत्तमा
All Arihantas are the best.
(सभी अरिहंत उत्तम हैं।)

सिद्ध लोगुत्तमा
All Siddhas are the best.
(सभी सिद्ध उत्तम हैं।)

साहू लोगोत्तमो
All Saints are the best.
(सभी साधु उत्तम हैं।)

केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमो
Said by god are the best.
(केवली भगवान के द्वारा कहा धर्म उत्तम है।)

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
The four shelter are in the world.
(लोक में चार शरण हैं।)

अरिहंत सरणं पव्वज्जामि
I go to shelter of all Arihantas.
(मैं अरिहंतों की शरण को प्राप्त होता हूँ।)

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि
I go to shelter of all Siddhas.
(मैं सिद्धों की शरण को प्राप्त होता हूँ।)

साहू सरणं पव्वजामि
I go to shelter of all Saints.
(मैं साधुओं की शरण को प्राप्त करता हूँ।)

केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि
I go to shelter of said by God.
(मैं केवली भगवान के बताये गए धर्म की शरण को प्राप्त होता हूँ।)

हम सब चलते किसके नीचे–वीतराग शासन के पीछे।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो पाप को गलाता है और पुण्य को लाता है उसे मंगल कहते हैं।

प्रश्न 2. – मंगल, उत्तम व शरण कितने होते हैं ?

उत्तर – मंगल, उत्तम व शरण 4–4 होते हैं।

प्रश्न 3. – उत्तम किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिससे श्रेष्ठ कोई दूसरा न हो, उसे उत्तम कहते हैं।

प्रश्न 4. – शरण किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिसके आश्रय से संसारी जीव जन्म–मरण के भय से छूट जाते हैं, जो निर्भयता को लाती है, वह शरण कहलाती है।

प्रश्न 5. – चार मंगल के सिवाय लोक में और कोई मंगल हैं ?

उत्तर – नहीं, चार मंगल के सिवाय लोक में और कोई मंगल नहीं हैं, ये शाश्वत हैं, सर्वकाल में इतने ही थे और रहेंगे। ऐसा ही उत्तम व शरण में जानना चाहिए।

प्रश्न 6. – चारों मंगल में आचार्य व उपाध्याय कौन–से मंगल हैं ?

उत्तर – इन चारों में आचार्य और उपाध्याय साधु मंगल के अन्तर्गत आते हैं। ऐसा ही उत्तम व शरण में जानना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न :–

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

1. जिससे श्रेष्ठ कोई दूसरा न हो, उसे..कहते हैं।
2. आचार्य, उपाध्याय भी .... मंगल हैं।
3. जो पाप को गलाता है, उसे.. कहते हैं।
4. जिसके आश्रय से संसारी जीव .... से छूट जाते हैं उसे शरण कहते हैं।
5. मंगल......................... होते हैं।

पाठ-3 अक्षर ज्ञान

स्वर गीत – बोलो बच्चो बोलो, आठ कर्म को धोलो।

''अ'' से बनता है अरिहंत, जाप से होता पाप का अंत।
''आ'' से बनता है आचार्य, सिखलाता हमको आचार।
''इ'' से इन्द्र वही बनता है, साधु वंदन जो करता है।
''ई'' से ईश का ध्यान करें हम, उनकी ही नित जाप करें हम।
''उ'' से उपाध्याय कहलाते, स्वयं पढ़ें मुनियों को पढ़ाते।
''ऊ'' से ऊर्ध्वलोक को जानो, उर्ध्वगामी बनने की ठानो।

''ऋ'' से ऋद्धि धारी मुनिवर, तप करके बनते हैं जिनवर।
''ए'' से एलाचार्य कहाते, मोक्षमार्ग में हमें लगाते।
''ऐ'' से ऐलक बनते हैं जो, मुनि बनने को तत्पर हैं वो।
''ओ'' से ओम की जाप करो नित, पंच प्रभु को याद करो नित।
''औ'' से औषधि दान करें हम, स्वस्थ निरोग शरीर वरें हम।
''अं'' से बनते अंग ज्ञान के, वर्धमान हो ज्ञान ध्यान से।
''अ:'' से अहोभाव हम लाएँ, सम्यग्दर्शन जल्दी पाएँ।
''अ'' से अक्षर ज्ञान करो तुम, ''ज्ञ'' से ज्ञानी बन जाओ तुम।।

अभ्यास प्रश्न :– सही (✓) गलत (X) का चिन्ह लगाइए।

1. ''ए'' से ऐलक बनता है। (   )
2. ''ओ'' से ओम बनता है। (   )
3. ''अ:'' से अरिहंत नहीं बनता है। (   )
4. ''इ'' से इन्द्र बनता है। (   )
5. ''ज्ञ'' से अज्ञानी बनता है। (   )

English Alphabets

पाठ-4

A

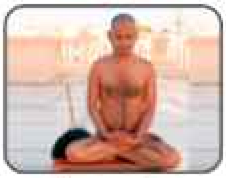

Ascetic
(मुनि)

B

Bowing
(वंदन)

C

Charity
(दान)

D

Devotion
(भक्ति)

E

Electricbody
(तेजस शरीर)

F

Forgiveness
(क्षमा)

G

God
(भगवान)

H

Holy Book
(शास्त्र)

I

Immortal
(अमर)

J

Jai Jinendra
(जय जिनेन्द्र)

K

Knowledge
(ज्ञान)

L

Liberation
(मोक्ष)

M

Meditation
(ध्यान)

N

Non-Violent
(अहिंसा)

O

Omniscient
(सर्वज्ञ)

P

Preceptor
(गुरु)

Q

Quinen
(श्रीफल)

R

Right Faith
(सम्यग्दर्शन)

S

Soul
(आत्मा)

T

Temple
(जिनालय)

U

Untimely Death
(अकाल मृत्यु)

V

Vow
(व्रत)

W

Worship
(पूजा)

X

Xylography
(लकड़ी की नक्काशी)

Y

Yoga
(योग)

Z

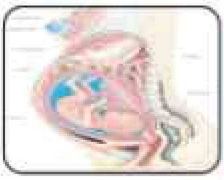

Zoon
(पर्याप्तक अवस्था)

The fire cannot brun without Saints.

Alphabet obe :-

ABCD	Never look T.V.
EFGH	Evey play good match
IJKL	My god is very well
MNOP	Never tell grumphy
QRST	Never eat nasty
UVW	Ever good pursue
XYZ	Nod the god head.

Word Meaning :-

Never - कभी नहीं, Look- देखो, ever - हमेशा, play - खेले, good - अच्छे, match- खेल, my - मेरा, god - ईश्वर, very - बहुत, well - बहुत अच्छा, tell - बोलो, grumpy - कठोर, eat - खाओ, nasty - अरुचिकर, pursue - आचरण करो, nod - नमस्कार, god head - सिद्ध भगवान।

Exercise :-

Learn the Alphabet ode.
Learn all word meanings.
Learn English Alphabets.

पाठ-5 अंक ज्ञान

''एक'' होता है धर्म द्रव्य। ''दो'' होते आकाश द्रव्य।
''तीन'' होते हैं रत्नत्रय। ''चार'' होती हैं गतियाँ।
''पाँच'' इन्द्रिय होती हैं। ''छह'' कषाय होती हैं।
''सात'' होते तत्त्व यहाँ। ''आठ'' होते कर्म यहाँ।
''नौ'' पदार्थ को जानो भाई। ''दस'' धर्म महा सुखदायी
उपमा प्रमाण, संख्या प्रमाण। जान के पाओ पद निर्वाण।

Table ode

2x1 = 2	Prabhu I bow to you.
2x2 = 4	The passions are four.
2x3 = 6	Bad habits risk.
2x4 = 8	Tirthankar is the great.
2x5 = 10	To be a great Jain.
2x6 = 12	Keep every ones help.
2x7 = 14	Do not go to canteen.
2x8 = 16	Never tells grumpy.
2x9 = 18	Never drink bed tea.
2x10 = 20	Jainism is lovely.

अभ्यास :-

* Learn the table ode
* अंक ज्ञान को कण्ठस्थ करें।

पाठ-6

जीव/अजीव (चेतन/अचेतन

दादी-नानी से सुनी कहानी,
जीव-अजीव की बात सुहानी।
जाने देखे जो इस जग में,
जीव कहाता वो इस भव में।

त्रस स्थावर दो हैं भेद,
संसारी और मुक्त हैं भेद।
जीव निराले हैं इस जग में,
जानो ध्यान रखो तुम मन में।।

जिसमें दर्शन ज्ञान नहीं हैं,
इस धरती पै अजीव वही हैं।
जीव अजीव का खेल है जग में,
जान इन्हें पहुँचो शिव मग में।।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिसमें चेतना पाई जाती है अथवा जो सुख-दु:ख का अनुभव करता है उसे जीव कहते हैं। जैसे-चींटी, भौंरा, मनुष्य आदि।

प्रश्न 2. – जीव के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर – जीव के दो भेद हैं- 1. संसारी जीव, 2. मुक्त जीव।

प्रश्न 3. – अजीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिसमें ज्ञान, दर्शन नहीं है, जो सुख-दुख का अनुभव नहीं करता है उसे अजीव कहते हैं। जैसे-टेलीविजन, मोबाइल, घड़ी आदि।

प्रश्न 4. – संसारी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो जन्म-मरणादि दु:खों से सहित हैं, जिसके ज्ञानावरणादि आठों कर्म होते हैं, उसे संसारी जीव कहते हैं।

प्रश्न 5. – मुक्त जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो जन्म-मरणादि दु:खों से रहित हैं, जिनके ज्ञानावरणादि आठ कर्म नहीं होते, वे मुक्त जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 6. – संसारी जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर – संसारी जीव के दो भेद हैं-
1. स्थावर जीव, 2. त्रस जीव।

प्रश्न 7. – स्थावर जीव किसे कहते हैं व कितने भेद होते हैं ?

उत्तर – जिनमें मात्र स्पर्शन इन्द्रिय होती है, वे स्थावर जीव कहलाते हैं।
इनके पाँच भेद होते है-
1. पृथ्वीकायिक 2. जलकायिक
3. अग्निकायिक 4. वायुकायिक
5. वनस्पतिकायिक

प्रश्न 8. – त्रस जीव किसे कहते हैं व उनके कितने भेद होते हैं ?

उत्तर – जिसमें दो इन्द्रिय से लेकर पाँच इन्द्रियाँ पायी जाती हैं, वे त्रस जीव कहलाते हैं, इनके पाँच भेद है:-
1. दो इन्द्रिय 2. तीन इन्द्रिय
3. चार इन्द्रिय 4. संज्ञी पंचेन्द्रिय
5. असंज्ञी पंचेन्द्रिय।

अभ्यास प्रश्न-

मिलान कीजिए -

जीव	दो इन्द्रिय
त्रस	मनुष्य
संसारी	चेतना रहित
अजीव	अग्निकायिक
स्थावर	चेतना सहित

पाठ-7

इन्द्रियाँ

आओ बच्चों खेलें खेल।
एक बनाई हमने जेल।।
पाँच द्वार हैं इसके भाई।
इन्द्रिय नाम जहां में पाई।।

इन्द्र समां जो रहती हैं।
वो इन्द्रिय कहातीं हैं।।

प्रथम स्पर्शन इन्द्रिय है।
छूकर ज्ञान कराती है।।

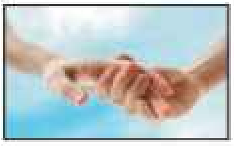

दूजी रसना इन्द्रिय है।
खट्टा-मीठा बताती है।।

घ्राण इन्द्रिय तीजी न्यारी।
नासा गंध सुँघाती प्यारी।।

चौथी चक्षु इन्द्रिय निराली।
रंग-बिरंगी दुनियाँ दिखाती।।

अन्तिम इन्द्रिय कर्ण कहाती।
सुनकर शब्द ज्ञान करवाती।।

इनकी जेल को त्यागो तुम।
सिद्धालय को पा लो तुम।।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर – जिससे जीव की पहिचान होती है, अथवा जो अपने–अपने विषयों में इन्द्र के समान स्वतंत्र होती हैं वह इन्द्रिय कहलाती हैं।

प्रश्न 2. – इन्द्रियाँ कितनी होती हैं, और कौन–कौन सी होती हैं?

उत्तर – इन्द्रियाँ पाँच होती हैं:–
1. स्पर्शन इन्द्रिय, 2. रसना इन्द्रिय, 3. घ्राण इन्द्रिय, 4. चक्षु इन्द्रिय, 5. कर्ण इन्द्रिय।

प्रश्न 3. – स्पर्शन इन्द्रिय किसे कहते हैं और उनके विषय बताइये?

उत्तर – जिस इन्द्रिय के द्वारा ठण्डा, गर्म, कठोर, नरम, रूखा, चिकना, हल्का, भारी आदि का ज्ञान होता है, उसे ''स्पर्शन इन्द्रिय'' कहते हैं।

प्रश्न 4. – रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं तथा उसके विषय बताइये?

उत्तर – जिस इन्द्रिय से खट्टा, मीठा, चरपरा, कड़वा, कषायला आदि का ज्ञान होता है, उसे ''रसना इन्द्रिय'' कहते हैं।

प्रश्न 5. – घ्राण इन्द्रिय किसे कहते हैं तथा उसके विषय बताइये?

उत्तर – जिस इन्द्रिय के द्वारा सुगंध या दुर्गंध का ज्ञान होता है, उसे ''घ्राण इन्द्रिय'' कहते हैं।

प्रश्न 6. – चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं तथा उसके विषय बताइये?

उत्तर – जिस इन्द्रिय के द्वारा लाल, पीला, सफेद, हरा, काला आदि वर्ण का ज्ञान हो, उसे ''चक्षु इन्द्रिय'' कहते हैं।

प्रश्न 7. – कर्ण इन्द्रिय किसे कहते हैं तथा उसके विषय बताइये?

उत्तर – जिस इन्द्रिय के द्वारा आवाज (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) का ज्ञान होता है उसे ''कर्ण इन्द्रिय'' कहते हैं।

प्रश्न 8. – पंच इन्द्रिय के विषय में कौन–कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर – स्पर्शन इन्द्रिय – हाथी
रसना इन्द्रिय–मछली
घ्राण इन्द्रिय–भौंरा
चक्षु इन्द्रिय–पतंगा
कर्ण इन्द्रिय – साँप, हिरण आदि प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न 9. – ये प्राणी विषयों में क्यों प्रसिद्ध हैं?

उत्तर – क्योंकि ये प्राणी इन्द्रिय विषयों में अपनी सुध–बुध भूलकर अपने प्राण तक खो देते हैं।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

1. जीव के पहचान चिह्नको............... कहते हैं।
2. इन्द्रियाँ .... होती हैं।
3. सुगंध, दुर्गंध................ इन्द्रिय का विषय है।
4. इन्द्र के समान.................... होती हैं।
5. चक्षु इन्द्रिय के विषय में............. प्रसिद्ध हुआ।

पाठ-8

पाप

आओ प्यारी गुड़िया रानी,
तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी।
कहते गुरुवर पाप हैं पाँच,
इनसे जीव में आती आँच।।1।।

पहला पाप कहता हिंसा,
कहीं नहीं पाता है प्रशंसा।
दूजा पाप है झूठ बोलना,
सत्यवान से डरते रहना।।2।।

तीजा पाप कहाता चोरी,
पर वस्तु से नीयत जोरी।
चौथा पाप कुशील कहाता,
ब्रह्मचर्य से दूर भगाता।।3।।

परिग्रह पाँचवां पाप कहाता,
नरक, निगोद की सैर कराता।
इन पापों की यही कहानी,
त्यागो इनको गुड़िया रानी।। 4।।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – निंद्य (बुरे) आचरण एवं निंद्य भाव (विचार) को पाप कहते हैं।

प्रश्न 2. – पाप कितने होते हैं ?

उत्तर – पाप अनंत होते हैं। फिर भी उनके मुख्य रूप से पाँच भेद हैं।

1. हिंसा
2. झूठ
3. चोरी
4. कुशील
5. परिग्रह।

प्रश्न 3. – हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर – किसी जीव को मारना, दुःख देना, सताना, ''हिंसा पाप'' कहलाता है।

प्रश्न 4. – हिंसा पाप करने से क्या हानि होती है ?

उत्तर – हिंसा करने से जीव नरक आदि गति में दुःख ही दुःख प्राप्त करता है और कोई भी उसे पसंद नहीं करता है।

प्रश्न 5. – झूठ पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – सत्य को छिपाना, जो पदार्थ जैसा देखा, सुना, वैसा न कहना ''झूठ पाप'' है।

प्रश्न 6. – झूठ पाप से क्या हानि है ?

उत्तर – झूठ प्रगट होने पर बहुत अपमान होता है, और संसार में कोई उसका विश्वास नहीं करता। ऐसे जीव मरकर गूँगे होते हैं व नरक तिर्यंचों में जन्म लेते हैं।

God helps them those help them self.

प्रश्न 7. – चोरी पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – बिना पूछे किसी की रखी हुई, भूली हुई या रास्ते में पड़ी हुई वस्तु को ग्रहण करना ''चोरी पाप'' है।

प्रश्न 8. – चोरी पाप करने से क्या हानि है ?

उत्तर – चोरी करने वाला प्राणी सदा भयाक्रान्त (डरा हुआ) रहता है। फिर चोरी पकड़े जाने पर राजदण्ड भोगना पड़ता है, समाज में उसका तिरस्कार होता है तथा परलोक में प्राय: गधा, बैल, ऊँट, नारकी आदि होते हैं।

प्रश्न 9. – कुशील पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर – पर पुरुष या परस्त्री के सेवन को या उनके प्रति खोटे विचार रखने को कुशील कहते हैं।

प्रश्न 10. – कुशील पाप करने से क्या हानि है ?

उत्तर – कुशील सेवन से असंख्य जीवों की हिंसा तथा अनेक असाध्य रोग एड्स, कैंसर आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं तथा ऐसे स्त्री, पुरुष व्यभिचारी कहे जाते हैं तथा समाज में तिरस्कृत किए जाते हैं।

प्रश्न 11. – परिग्रह किसे कहते हैं ?

उत्तर – अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह करने की मूर्च्छा (इच्छा) रखने को परिग्रह कहते हैं।

प्रश्न 12. – परिग्रह पाप से क्या हानि होती है ?

उत्तर – परिग्रह संचय के लिए व्यापार में मायाचारी की नीति अपनानी पड़ती है, तत्पश्चात् उपार्जित धन-परिग्रह की रक्षा में चिंतित रहना पड़ता है। ऐसा जीव संक्लेश रूप परिणाम मोह, मान, क्रोध, लोभ इत्यादि काषायिक भावों से आर्त्त रौद्र भाव से मरण तथा अनेक रोगों से ग्रसित हो मरण कर उसी परिग्रह में सर्प या कीड़ा होता है तथा नरक के घोर दु:खों को प्राप्त करता है।

प्रश्न 13. – पाँचो पापों में कौन-कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर – हिंसा-धन श्री, झूठ- सत्यघोष
चोरी- तापस, कुशील-कोतवाल
परिग्रह-श्मश्रुनवनीत।

नोट :- एक बार कुशील सेवन से नौ लाख त्रस सम्मूर्च्छन जीवों की हिंसा होती है।

शिक्षा :- इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि पाँचों पाप महादु:खदायी है सदैव इनसे दूर रहना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न :- सही (✓) गलत (X) का चिह्न लगाइए।

1. पाप मुख्य रूप से चार होते हैं। ( )
2. हिंसा पाप में धनश्री प्रसिद्ध हुई। ( )
3. कुशील सेवन से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। ( )
4. पाप अनंत होते हैं। ( )
5. सत्य को न छिपाना झूठ कहलाता है। ( )

पाठ-9

कषाय

मन, चेतन को कसती जग में,
चार कषाय प्रसिद्ध जगत में।
क्रोध यहाँ पर लड़वाता है,
नरक निगोद में भिजवाता है।।

मान न माने श्रेष्ठ किसी को,
आपस में न ज्येष्ठ किसी को।
कथनी करनी में जिसके अन्तर,
माया बनवाती है बन्दर।।

लोभ पाप का बाप कहा है,
इसने ही संसार रचा है।
चारों कषायें त्यागी जिसने,
मुक्ति महल पग धरा है उसने।।

"हम भी यह संकल्प करेंगे,
कषाय तजकर मुक्ति वरेंगे।।"

भविष्य में पशु होते हैं–नेल बड़े जो रखते हैं।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो आत्मा को कसे, दु:ख दे, उसे ''कषाय'' कहते हैं।

प्रश्न 2. – कषाय के मुख्य कितने भेद हैं ?

उत्तर – कषाय के मुख्य चार भेद हैं–
1. क्रोध, 2. मान, 3. माया
4. लोभ।

प्रश्न 3. – कषाय के अन्य कितने भेद हैं ?

उत्तर – विशेष रूप से भेद करने पर दो भेद, नौ भेद और सोलह उत्तर भेद भी होते हैं।

प्रश्न 4. – क्रोध कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर – गुस्सा करने को ''क्रोध कषाय'' कहते हैं ?

प्रश्न 5. – मान कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर – अभिमान (अहंकार) को ''मान कषाय'' कहते हैं।

प्रश्न 6. – माया कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर – छलकपट करने को ''माया कषाय'' कहते हैं।

प्रश्न 7. – लोभ कषाय किसे कहते हैं।

उत्तर – लालच करने को ''लोभ कषाय'' कहते हैं।

प्रश्न 8. – कषायों से क्या हानि हैं ?

उत्तर – कषाय करने से आपस में बैर बँधता है तथा इस भव में और पर भव में बहुत दु:ख सहना पड़ते हैं।

प्रश्न 9. – कषाय करने में कौन–कौन प्रसिद्ध हुए ?

उत्तर – क्रोध कषाय–द्वीपायन मुनि
मान कषाय–रावण
माया कषाय–मृदुमति
लोभ कषाय–लुब्धत्त सेठ।

प्रश्न 10. – कषायों को किस प्रकार जीतना चाहिए ?

उत्तर – क्षमा से–क्रोध को, विनम्रता से–मान को, सरलता से–माया को, दान से–लोभ को जीतना चाहिए।

सही विकल्प चुनिए –

1. जो आत्मा को कसे उसे क्या कहते हैं ?
   (A) पाप (B) कषाय (C) हिंसा
2. क्या पाप का बाप कहलाता है ?
   (A) परिग्रह (B) मान (C) लोभ
3. रावण किस कषाय में प्रसिद्ध हुआ ?
   (A) मान कषाय (B) माया कषाय (C) क्रोध कषाय
4. मुख्य रूप से कषाय के कितने भेद होते हैं ?
   (A) 16 (B) 4 (C) 25
5. द्वीपायन मुनि किस कषाय में प्रसिद्ध हुए ?
   (A) मान कषाय में (B) माया कषाय (C) क्रोध कषाय में

पाठ-10

गति

टन-टन-टन-टन टेलीफोन, वीर प्रभु का आया फोन।
चार गति हैं दुःख की खान, खोता इनमें सारा ज्ञान।।

जीव दया न करते हैं,
प्रभु नाम न जपते हैं।
घोर दुःखों को पाते हैं,
नरकों में वह जाते हैं।।

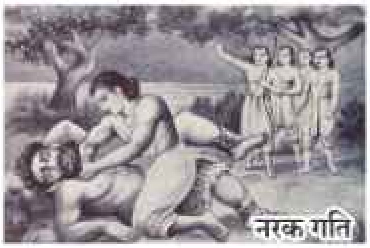

मायाचारी करते हैं,
भव वन में वे भ्रमते हैं।
घोर यातना पाते हैं,
तिर्यंचों में जाते हैं।।

कटु वचन न कहते हैं,
अल्प-परिग्रह रखते हैं।
मानव तन वे पाते हैं,
स्वर्ग-मोक्ष में जाते हैं।।

देवगति

अणुव्रतों का पालन करते,
संयम भाव हृदय में धरते।
देव गति वे पाते हैं,
अनुक्रम से शिव जाते हैं।।

विनम्र गुरु का संघ है प्यारा-विनम्रता का है भण्डारा।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – गति किसे कहते हैं

उत्तर – जो भव में भवान्तर की प्राप्ति कराये, उस अवस्था विशेष को 'गति' कहते हैं।

प्रश्न 2. – गति किसको होती है और कितनी होती हैं?

उत्तर – गतियाँ संसारी जीवों के होती हैं। गति चार होती हैं–

1. नरक गति 2. तिर्यंच गति

3. मनुष्य गति 4. देव गति

प्रश्न 3. – नरक गति किसे कहते हैं?

उत्तर – नरक गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को "नरक गति" कहते हैं। जैसे– प्रथमादि नरक के नारकी।

प्रश्न 4. – तिर्यंचगति किसे कहते हैं?

उत्तर – तिर्यंचगति नाम कर्म के उदय से होने वाली अवस्था विशेष को तिर्यंच गति कहते हैं जैसे एक, द्वीन्द्रियादि त्रस, स्थावर, घोड़ा, ऊँट आदि जीव।

प्रश्न 5. – मनुष्य गति किसे कहते हैं?

उत्तर – मनुष्य गति नामकर्म के उदय से प्राप्त होने वाली जीव की अवस्था विशेष को "मनुष्य गति" कहते हैं।

जैसे–भोगभूमि, कर्मभूमि के मनुष्य सम्मूर्च्छन मनुष्य।

प्रश्न 6. – देव गति किसे कहते हैं?

उत्तर – देवगति नामकर्म के उदय से प्राप्त होने वाली जीव की अवस्था विशेष को "देवगति" कहते हैं। जैसे भवनवासी, व्यन्तर आदि देव।

प्रश्न 7. – किस कारण से कौन–सी गति की प्राप्ति होती है?

उत्तर – नरक गति–बहुत आरम्भ और परिग्रह रखने से, तिर्यंच गति–मायाचारी करने से एवं शील रहित जीवन जीने से, मनुष्य गति– अल्प आरम्भ एवं अल्प परिग्रह रखने से, देवगति– अल्प आरम्भ, अल्प परिग्रह एवं संयम के द्वारा देवगति की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 8. – कौन से प्राणी गतियों में घूमते हैं और क्यों?

उत्तर – अज्ञान और मोहवश संसारी प्राणी गतियों में भ्रमण करते हैं।

प्रश्न 9. – गतियों से कैसे छूटा जा सकता है?

उत्तर – समीचीन धर्म साधना से प्राणी समस्त गतियों के परिभ्रमण से छूट सकता है।

पाठ-1

श्रावक के मूलगुण

श्रद्धावान्, विवेकवान्, क्रियावान् बनेंगे भगवान्,
अष्ट मूलगुण को पालेंगे, सच्चे श्रावक कहलायेंगे।
पंच उदम्बर फल न खायें, मद्य, माँस, मधु को न चाहें,
रात्रि भोजन अहितकर, देव दर्शन ही हितकर।
अनछने पानी में जीव असंख, जीव दया सुखदाई कहंत,
लोटा, डोरी, छन्ना, रखना, श्रावक धर्म की लाज है रखना।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – श्रावक किसे कहते हैं?

उत्तर – श्रा=श्रद्धावान्, व=विवेकवान्, क=क्रियावान्, जो इन गुणों से रहित हो, तथा आत्मकल्याण की भावना रखता हो उसे "श्रावक" कहते हैं।

प्रश्न 2. – श्रावक किन गुणों से सहित होता है?

उत्तर – श्रावक अष्ट मूलगुणों से सहित होता है।

प्रश्न 3. – मूलगुण किसे कहते हैं?

उत्तर – मूल का अर्थ होता है जड़। जैसे–जड़ के बिना पेड़ नही होता, ऐसे ही मूलगुण गुणों के बिना कोई श्रावक नहीं होता।

प्रश्न 4. – श्रावकों के मूलगुण कितने व कौन–कौन होते हैं?

उत्तर – श्रावकों के आठ मूलगुण होते हैं–

1. पाँच उदम्बर फल खाने का त्याग
2. मद्य का त्याग
3. माँस का त्याग
4. मधु का त्याग
5. रात्रि भोजन का त्याग
6. नित्य देव दर्शन
7. अनछने पानी का त्याग
8. जीव दया करना

प्रश्न 5. – उदम्बर फल किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन फलों में असंख्यात त्रस जीव होते हैं, उन्हें "उदम्बर फल" कहते हैं।

प्रश्न 6. – उदम्बर फल कितने तथा कौन–कौन से होते हैं?

उत्तर – उदम्बर फल पाँच प्रकार के होते हैं–

1. बड़ फल 2. पीपल फल
3. पाकर (अंजीर) फल
4. ऊमर फल 5. कठूमर फल

प्रश्न 7. – जैन श्रावक की पहिचान किससे होती है ?

उत्तर – यदि जैन श्रावक कहीं जाए और वहाँ जाकर छन्ने से पानी को छानकर पिये तो सभी लोग (अजैन) यह समझेंगे कि ये जैन श्रावक है।

प्रश्न 8. – पानी छानकर क्यों पीना चाहिए ?

उत्तर – अनछने जल में असंख्य जीव राशि होती है कुछ नेत्रों द्वारा दिख जाती है व कुछ नहीं। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि पानी की बूँद में 36450 जीव राशि पायी जाती है। इन जीवों के शरीर में पहुँचने से असाध्य रोग हो जाते हैं।

प्रश्न 9. – श्रावक के कितने आवश्यक होते हैं ?

उत्तर – श्रावक के छः आवश्यक हैं–

1. देव पूजा 2. गुरु उपास्ति
3. स्वाध्याय 4. संयम
5. तप 6. दान

प्रश्न 10. – आवश्यक किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिसके बिना साधारणतः भी न रहा जाए वो आवश्यक कहलाते हैं। जैसे– ऑक्सीजन के बिना जीवन संभव नहीं, वैसे ही षट् आवश्यक के अभाव में कोई श्रावक नहीं हो सकता।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. – श्रावक के मूलगुण कितने होते हैं ?

(A) 28 (B) 36 (C) 8 (D) 46

प्रश्न 2. – कौन सा फल उदम्बर है ?

(A) अन्नास (B) पीपल (C) सेब (D) ड्रेगन फ्रूट

प्रश्न 3. – श्रावक के आवश्यक कर्तव्य कितने होते हैं ?

(A) 20 (B) 18 (C) 6 (D) 8

प्रश्न 4. – वैज्ञानिक मतानुसार पानी की एक बूँद में कितने जीव होते हैं ?

(A) 189543 (B) 87659000 (C) 986420 (D) 36450

श्रावकगण

पाठ-2

सप्त व्यसन

खोटी आदत आत्मा का घात, कहते हैं गुरुवर व्यसन हैं सात,
हार-जीत पैसों की बाजी, ''जुआ'' लगाता जान की बाजी।
अहिंसा धर्म का करें विनाश, निर्दय हो जो खाते हैं ''माँस'',
घर-परिवार का करती नाश,''शराब'' करती विवेक विनाश।
''परस्त्री'' पर नजर जो खोटी, ''वेश्या गमन'' की सजा न छोटी,
माँ को वत्स से करते दूर, बने ''शिकारी'' जग में क्रूर।
परवस्तु से नीयत है जोरी, महापाप कहलाता ''चोरी''
सप्त व्यसन को जान के भाई, जिसने त्यागे महानिधि पाई।।

प्रश्न 1. - व्यसन किसे कहते हैं ?

उत्तर - बुरी आदतों को 'व्यसन' कहते हैं ऐसे कार्य जिनके कारण भय अथवा लोक निंदा होती है ये ''व्यसन महापाप'' कहलाते हैं।

प्रश्न 2. - व्यसन कितने व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर - व्यसन सात होते हैं।

जुआ खेलना माँस मद, वेश्या गमन शिकार।
चोरी पर रमणी रमण, सातों व्यसन निहार।।

1. जुआ खेलना, 2. माँस खाना,
3. शराब पीना, 4. वेश्या गमन,
5. शिकार करना, 6. चोरी करना,
7. पर स्त्री गमन करना।

प्रश्न 3. - जुआ किसे कहते हैं ?

उत्तर - हार-जीत से जो खेल पैसों की बाजी लगाकर खेले जाते हैं उसे जुआ कहते हैं। जैसे ताश, चौपड़, सट्टा, लॉटरी आदि।

प्रश्न 4. - जुआ खेलने से क्या हानि होती है ?

उत्तर - जुआ खेलने से आर्थिक क्षति, लोक निंदा को झेलना पड़ता है तथा धर्मध्यान से रहित संक्लेषित परिणाम रहने के कारण मृत्यु के बाद नरक आदि खोटी गतियों में जाना पड़ता है।

प्रश्न 5. - माँस किसे कहते हैं ?

उत्तर - माँस त्रस जीवों के घात से उत्पन्न होता है इसमें अनेक जीव पैदा होते और मरते रहते हैं।

प्रश्न 6. - माँस खाने से क्या हानि है ?

उत्तर - माँस खाने से अहिंसा धर्म का विनाश होता है। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं। माँस खानेवालों के परिणाम क्रूर हो जाते हैं तथा मृत्यु के बाद नरक आदि में घोर दु:खों को सहना पड़ता है।

प्रश्न 7. - मद्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - मद्य शराब को कहते हैं।

प्रश्न 8. - शराब किसे कहते हैं ?

उत्तर - अनेक सड़े-गले फलों के रस जिसमें अनेक त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं उन्हें सड़ाकर शराब बनाई जाती है इसे पीने से नशा उत्पन्न होता है बुद्धि नष्ट हो जाती है जिससे अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं रहता है।

प्रश्न 9. - शराब पीने से क्या हानि होती है ?

उत्तर - शराब पीने से अनंत जीवों की हिंसा होती है। त्रस जीवों के होने से उनके माँस भक्षण

का भी दोष लग जाता है। शराबी के हित–अहित का विवेक खत्म हो जाता है। छोटे–बड़े, पत्नी, माँ, बेटी में भेद नहीं कर पाता। माँ को पत्नी और पत्नी को माँ समझने लगता है। शराब पीने से कैंसर, श्वसन संबंधी आदि अनेक रोग हो जाते हैं और मरने के बाद नरक में जाना पड़ता है।

प्रश्न 10.– वेश्या सेवन किसे कहते हैं ?

उत्तर – दुराचारिणी स्त्रियों से सम्बन्ध मेल–मिलाप रखना या उनसे गलत काम करना "वेश्या सेवन" कहलाता है।

प्रश्न 11.– वेश्या सेवन से क्या–क्या हानियाँ होती हैं ?

उत्तर – वेश्या सेवन से धर्म का विनाश, लोक मर्यादा की समाप्ति, धन सम्पत्ति की हानि तथा अनेक असाध्य रोग उत्पन्न होते हैं तथा प्रगट होने पर बेइज्जती आदि का दुख जीवन भर भोगना पड़ता है।

प्रश्न 12.– वेश्या सेवन से परलोक में क्या फल मिलता है ?

उत्तर – वेश्या सेवन से परलोक में (नरक में) अग्नि से संतप्त, लोहमयी स्त्रियों से आलिंगन आदि कराया जाता है और नारकी अपनी विक्रिया शक्ति से अनेक दुख देते हैं।

प्रश्न 13.– शिकार किसे कहते हैं ?

उत्तर – खेल–खेल में अथवा माँस की इच्छा से पक्षियों या जानवरों को मारा जाना शिकार कहलाता है।

प्रश्न 14.– शिकार से परलोक में क्या हानि होती है ?

उत्तर – शिकार खेलनेवाले निर्दयी प्राणी मरकर नरक में जाते हैं उन्हें भी पशु–पक्षी जिनका कि शिकार किया वे उस शिकारी को बार–बार ताड़ना देते है।

प्रश्न 15.– चोरी किसे कहते हैं ?

उत्तर – किसी की भूली हुई, पड़ी हुई या रखी हुई वस्तु को बिना पूछे ले लेना चोरी है। बार–बार इसी कार्य को करना चोरी कहलाता है।

प्रश्न 16.– चोरी करने से क्या हानि होती है ?

उत्तर – चोरी करने से सारी लोक प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। समस्त लोगों में विश्वास समाप्त हो जाता है। प्रत्येक जगह तिरस्कार प्राप्त होता है एवं सामाजिक तथा राजनैतिक दण्ड मिलता है और अन्त में जीवन भर बदनामी भोगनी पड़ती है।

प्रश्न 17.– परस्त्री किसे कहते हैं ?

उत्तर – अपनी स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्री को परस्त्री कहते हैं।

प्रश्न 18.– परस्त्री गमन से क्या हानि होती है ?

उत्तर – परस्त्री गमन से सदाचार एवं लोक मर्यादा भंग होती है, भय बना रहता है प्रकट होने पर बुरी तरह मारपीट एवं नाम बदनाम हो जाता है।

प्रश्न 19.– सप्त व्यसन में कौन–कौन प्रसिद्ध हुए ?

उत्तर – जुआ–युधिष्ठिर माँस–बक राजा
मद्य–यादव (यदुवंशी)
वेश्या सेवन–चारूदत्त
शिकार–ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती
चोरी–तापसी परस्त्री–रावण

अभ्यास प्रश्न –सही (✓) गलत (X) का चिन्ह लगाइए।

1. अच्छी आदतों को व्यसन कहते हैं। (   )
2. हार जीत से पैसों की बाजी लगा खेलना जुआ कहलाता है। (   )
3. व्यसन सात होते हैं। (   )
4. जुआ में यावद प्रसिद्ध हुए थे। (   )
5. वेश्यागमन में रावण प्रसिद्ध हुआ। (   )

पाठ-3

तीर्थंकर

ऋषभनाथ के बेल बोलो, अजितनाथ के हाथी
संभवनाथ के घोड़ा बोलो, अभिनन्दन के बन्दर
सुमतिनाथ के चकवा बोलो, पद्मप्रभु के लाल कमल
सुपार्श्वनाथ के स्वस्तिक, चन्द्रप्रभु के चन्द्रमा
पुष्पदंत के मगर बताओ, शीतलनाथ के कल्पवृक्ष
श्रेयांसनाथ के गेंडा बोलो, वासुपूज्य के भैंसा
विमलनाथ के सूकर बोलो, अनंत के सेही
धर्मनाथ के वज्रदंड हैं शांतिनाथ के हिरण
कुंथुनाथ के बकरा बोलो, अरहनाथ की मछली
मल्लिनाथ के कलश बताओ, मुनिसुव्रत के कछुआ
नमिनाथ के नीलकमल है, नेमिनाथ के शंख
पार्श्वनाथ के सर्प बताओ, महावीर के सिंह।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. – तीर्थंकर किसे कहते हैं ?

उत्तर – जो धर्म तीर्थ के प्रवर्तक होते हैं, जिनके पंच कल्याणक होते हैं, जो सौ इंद्रों से वंदित, पूजित होते हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

प्रश्न 2. – कल्याणक कितने व कौन–से होते हैं ?

उत्तर – कल्याणक पाँच होते हैं।

1. गर्भ कल्याणक
2. जन्म कल्याणक
3. तप कल्याणक
4. ज्ञान कल्याणक
5. मोक्ष कल्याणक

प्रश्न 3. – तीर्थंकर की पहचान किससे होती है ?

उत्तर – तीर्थंकर की पहचान 'चिह्न' से होती है।

प्रश्न 4. – तीर्थंकर भगवान के चिह्न का निश्चय कौन और कब करता है ?

उत्तर – जन्म के उपरान्त सौधर्म इन्द्र जब सुमेरु पर्वत पर ले जाकर भगवान का अभिषेक करता है तब बालक के 1008 शुभ लक्षणों में से एक उनके दाहिने पाँव के अंगूठे पर जो चिह्न होता है, उन तीर्थंकर का वही चिह्न निश्चित करता है।

प्रश्न 5. – तीर्थंकर कितने होते हैं ?

उत्तर – ऐरावत और भरत क्षेत्र में 24 तीर्थंकर विदेह क्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 6. – एक साथ अधिक से अधिक कुल कितने तीर्थंकर हो सकते हैं ?

उत्तर – एक साथ अधिक से अधिक कुल 170 तीर्थंकर हो सकते हैं।

प्रश्न 7. – एक काल में अधिक से अधिक 170 तीर्थंकर कैसे हो सकते हैं ?

उत्तर – एक विदेह क्षेत्र संबंधी 32–32 उपविदेह हैं अतः पाँचो विदेह क्षेत्र संबंधी उप विदेहों का योग 160 हुआ। इस प्रकार प्रत्येक उप विदेह में एक–एक तीर्थंकर होने से 160 होते हैं और पाँच भरत और पाँच ऐरावत क्षेत्र के इन सबको जोड़ने पर 170 तीर्थंकर होते हैं।

अभ्यास प्रश्न –

1. आदिनाथ भगवान का चिह्न........................... है।
2. एक काल में अधिक से अधिक........................तीर्थंकर हो सकते हैं।
3. भगवान का अभिषेक............................ पर्वत पर होता है।
4. तीर्थंकर भगवान के.............................पाँच कल्याणक होते हैं।
5. विदेह क्षेत्र में .... तीर्थंकर विद्यमान हैं।

1

आदिनाथ भगवान

आदिनाथ भगवान
(First God)
चिह्न-बैल

English Poem

A for o may Adinath,
Be with me in every path,
Never forget naughty son,
you are father super one.

पद्यानुवाद

ए से ओ मेरे आदिनाथ, रहना हरदम मेरे साथ।
हम बच्चों को नहीं भूलना, आप ही है हम सबके तात।।

जन्म स्थान – अयोध्या नगरी
पिता का नाम – राजा नाभिराय
माता का नाम – महारानी मरुदेवी
शरीर की ऊँचाई – 500 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश आयु – 84 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – पद्मासन
वैराग्य का निमित्त – नीलांजना की मृत्यु देखकर
मोक्ष स्थल – कैलाश पर्वत
पूर्व पर्याय – सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र थे

कहानी– आदिनाथ भगवान के गर्भ में आने के 6 माह पहले ही देवों द्वारा राजा नाभिराय के आँगन में रत्नों की वृष्टि होने लगी थी और गर्भ में आने के बाद भी 9 माह तक रत्नों की वृष्टि होती रही। लगातार 15 माह तक रत्न बरसे। बालक के गर्भ में आने से पहले माता मरुदेवी ने गज आदि 16 शुभ स्वप्न देखे थे। समय आने पर चैत्र कृष्णा नवमी को तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। आदिनाथ भगवान को जैन धर्म का प्रवर्तक, वृषभनाथ, नाभिनंदन, कर्मभूमि के प्रथम सम्राट कहा जाता है। युवराज आदिकुमार के दो पत्नियाँ, दो पुत्रियाँ व भरतादि 101 पुत्र थे। दो पुत्रियाँ ब्राह्मी–सुन्दरी थी जिन्होंने पिता के स्वाभिमान के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया। पुत्र भरत 6 खण्ड का अधिपति प्रथम चक्रवर्ती व पुत्र बाहुबली प्रथम कामदेव हुए। 63 लाख पूर्व तक राज भोग करते–करते सभा में नीलांजना की मृत्यु देखकर वैराग्य धारण करके जिन दीक्षा ग्रहण कर ली। 1000 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त किया। 1000 वर्ष कम 1 लाख पूर्व तक केवली अवस्था में रहे और अंत में कैलाश पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया। जीने की कला सिखाने के कारण परम पिता कहलाये।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
आषाढ़ कृष्णा द्वितीया	चैत्र कृष्णा नवमी	चैत्र कृष्णा नवमी	फाल्गुन कृष्णा ग्यारस	माघ कृष्णा चतुर्दशी

विशेषतायें

- आदिनाथ भगवान के पुत्र बाहुबली–प्रथम कामदेव, पुत्र भरत– प्रथम चक्रवर्ती, पुत्र– वृषभसेन–प्रथम गणधर, अनन्तवीर्य–प्रथम मोक्षगामी।
- पुत्रियाँ ब्राह्मी व सुन्दरी – प्रथम गणिनी आर्यिका व प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी थी।
- पत्नी नन्दा के भरतादि 100 पुत्र व ब्राह्मी नामक पुत्री थी तथा सुनन्दा के एक पुत्र बाहुबली व एक पुत्री सुन्दरी थी।
- आदिनाथ भगवान ने ब्राह्मी को गणित शास्त्र व सुन्दरी को व्याकरण, छन्द व अलंकार शास्त्र सिखलाया।
- सभी तीर्थंकर चौथे काल में हुए परन्तु आदिनाथ भगवान तीसरे काल में 84 लाख पूर्व, 4 वर्ष 5½ माह बाकी थे तभी गर्भ में आये थे अर्थात् तीसरे काल के अंत में हुए (काल दोष के कारण)।
- दीक्षा हेतु आदिनाथ भगवान ''सुदर्शन'' नामक पालकी पर सवार होकर ''सिद्धार्थ'' नामक वन में गए थे।
- आदिनाथ भगवान की दीक्षा के बाद 6 माह तक अनशन धारण किया और 7 माह 9 दिन तक आहार विधि नहीं मिली। इस प्रकार 1 वर्ष 1 माह 9 दिन बाद ''अक्षय तृतीया'' के दिन इक्षु रस से आहार हुआ।
- आदिनाथ भगवान को हस्तिनापुर नगरी में राजा सोम व राजा श्रेयांस ने प्रथम आहार कराया था।

अभ्यास प्रश्न-

1. आदिनाथ भगवान के माता–पिता का नाम बताओ ?
2. आदिनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?
3. आदिनाथ भगवान को प्रथम आहार किसने कराया था ?
4. प्रथम कामदेव, चक्रवर्ती, गणधर व मोक्षगामी जीवों के नाम बताइए ?
5. आदिनाथ भगवान कहाँ से मोक्ष गये ?

2

अजितनाथ भगवान

अजितनाथ भगवान
(Win God)
चिह्न-हाथी

English Poem

Shri Ajitnath is your name,
What to say for your fame,
You are winner best of all,
I am missing every ball.

पद्यानुवाद

अजितनाथ है नाम आपका, जग प्रचलित है काम आपका।
सब वीरों को जीता तुमने, हर पल लूँ मैं नाम आपका।।

जन्म स्थान – अयोध्या नगरी
पिता का नाम – राजा जितशत्रु
माता का नाम – रानी विजय सेना
शरीर की ऊँचाई – 450 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश आयु – 72 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – चमकती हुई बिजली को गिरते देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (सिद्धवर कूट)
पूर्व पर्याय – विजय विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– महापवित्र अयोध्या नगरी में राजा जितशत्रु राज्य करते थे, उनकी रानी विजयसेना ने गज आदि सुन्दर–सुन्दर 16 स्वप्न देखे, जिनका फल राजा जितशत्रु ने बताया कि तुम्हारे गर्भ में तीर्थंकर बालक आने वाला है, तभी चारों ओर नगरी में खुशियाँ छा गयीं। माघ शुक्ल दशमी को बालक अजित का जितशत्रु के आँगन में अवतरण हुआ। इन्द्रों द्वारा सुमेरु पर्वत पर 1008 कलशों द्वारा जन्माभिषेक किया गया तथा इन्द्राणी द्वारा स्वर्ग से आये हुए वस्त्राभूषण पहनाये गए। बालक अजित धीरे–धीरे युवावस्था को प्राप्त हुए। राज भोग करते हुए कई दिन बीत गए तब एक दिन चमकती हुई बिजली को गिरते देखकर वैराग्य उत्पन्न हो गया और दीक्षा धारण करके 12 वर्ष तक कठोर मौन साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया और अन्त में सम्मेदशिखर पर्वत पर जाकर योग निरोध किया, चैत्र शुक्ला पंचमी के दिन आत्मविशुद्धि द्वारा मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या	माघ शुक्ला दशमी	माघ शुक्ला दशमी	पौष शुक्ला ग्यारस	चैत्र शुक्ला पंचमी

विशेषतायें

- सम्मेद शिखर जी से सर्वप्रथम मोक्ष जाने वाले तीर्थंकर अजितनाथ भगवान।
- अजितनाथ ऐसे तीर्थंकर हैं जिनके काल में 2½ द्वीप में पूरे 170 तीर्थंकर हुए थे।
- भरत चक्रवर्ती के बाद दूसरे सगर चक्रवर्ती इन्हीं के काल में हुए।
- सगर चक्रवर्ती ने सर्वप्रथम सम्मेदशिखर की वंदना की थी।
- आदिनाथ भगवान को मुक्त हुए 50 लाख करोड़ सागर बीत जाने पर अजितनाथ भगवान हुए।
- अजितनाथ भगवान ने 'सुप्रभा' नामक पालकी से 'सहेतुक' वन में जाकर दीक्षा ली थी।
- दीक्षा के बाद आहार के लिए अयोध्या नगरी में गए वहाँ 'ब्रह्मा' नामक श्रेष्ठी ने प्रथम आहार कराया।
- सिंहसेन आदि 90 गणधर थे।

अभ्यास प्रश्न-

1. अजितनाथ भगवान का जन्म स्थान का नाम बताओ ?
2. अजितनाथ भगवान कौन–से आसन्न से मोक्ष गये ?
3. पूरे 170 तीर्थंकर कौन–से तीर्थंकर के काल में हुए ?
4. दीक्षा के बाद आहार के लिए कौन–सी नगरी में गए थे ?
5. सम्मेद शिखर की सबसे पहले वंदना किसने की ?

3

संभवनाथ भगवान

संभवनाथ भगवान
(Possible God)
चिह्न-घोड़ा

English Poem

Save me Sambhavnath dada,
Show me true way o dada,
How to walk in blackish night,
Give me your super light.

पद्यानुवाद

हे संभवप्रभु रक्षा करना, सच्चा मार्ग दिखाना तुम।
रात अंधेरी कैसे निकलूँ, परम उजाला लाना तुम।।

जन्म स्थान – श्रावस्ती नगरी
पिता का नाम – राजा जितारी
माता का नाम – महारानी सुसेना
शरीर की ऊँचाई – 400 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश   आयु – 60 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय   आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – मेघ पटल का नाश देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (धवल कूट)
पूर्व पर्याय – पहले ग्रैवेयक के सुदर्शन नामक विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– अहमिन्द्र पद से चय करके श्रावस्ती नगरी के राजा जितारी की महारानी सुसेना के गर्भ में एक पुण्यात्मा का आगमन हुआ, गर्भ में आने से पहले माता ने गज आदि 16 शुभ स्वप्न देखे थे, गर्भ में आने के 6 माह पहले और 9 माह बाद तक रत्नों की वर्षा हुई थी। माता की सेवा के लिए स्वर्ग से अनेक देवियाँ आई थी, 9 माह बाद कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन बालक तीर्थंकर का जन्म हुआ। बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश किया, बाल्यावस्था से ही वैराग्यमयी चर्या के आधारी होते हुए एक दिन संध्याकाल में मेघपटल का नाश होता देखकर वैराग्य उत्पन्न हुआ और अपना राज्य भार अपने उत्तराधिकारी को सौंप दिया और स्वयं ने 'सहेतुक' नामक वन में जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली और 14 वर्षों तक छद्मस्थ अवस्था में साधना के पश्चात् केवलज्ञान प्राप्त करके धर्म तीर्थ की स्थापना की और अंत में चैत्र शुक्ला षष्ठी को सम्मेद शिखर से निर्वाण पद को प्राप्त किया।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
फाल्गुन शुक्ला अष्टमी	कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा	आश्विन शुक्ला पूर्णिमा	कार्तिक कृष्णा चतुर्थी	चैत्र शुक्ला षष्ठी

विशेषतायें

- अजितनाथ भगवान के बाद 30 करोड़ सागर बाद संभवनाथ भगवान हुए।
- इन्होंने 44 लाख पूर्व और 4 पूर्वांक तक राज्य किया था।
- दीक्षा हेतु 'सिद्धार्थ' नामक पालकी से 'सहेतुक' नामक वन में गये।
- दीक्षा के एक दिन बाद श्रावस्ती नगरी में आहार के लिए गए, वहाँ सुरेन्द्र दत्त नामक श्रावक ने प्रथम आहार कराया।
- चारुषेण आदि 105 गणधर थे।

अभ्यास प्रश्न-

1. संभवनाथ भगवान को English में क्या कहते हैं?
2. संभवनाथ भगवान का जन्म किस नगरी में हुआ था?
3. संभवनाथ भगवान की Enghlish Poem सुनाओ?
4. संभवनाथ भगवान का चिह्न क्या है?
5. संभवनाथ भगवान की आयु कितनी थी?

4

अभिनंदननाथ भगवान

अभिनंदननाथ भगवान
(Welcome God)
चिह्न-बन्दर

English Poem

That one is my golden day,
Abhinandan Swami i pray,
tell me god where you stay,
How to come you show me way.

पद्यानुवाद

वह है मेरा सुंदर दिन, पूजा करूँ अभिनंदन जिन।
हे प्रभु! जहाँ विराजे आप, कैसे पहुँचू बताओ आप।।

जन्म स्थान	– अयोध्या नगरी
पिता का नाम	– राजा संवर
माता का नाम	– रानी सिद्धार्था
शरीर की ऊँचाई	– 350 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश	आयु – 50 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय	आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन

वैराग्य का निमित्त – बादलों को नष्ट होते देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (आनन्द कूट)
पूर्व पर्याय – विजय नामक पहले अनुत्तर में अहमिन्द्र थे।

कहानी– अयोध्या नगरी के महाराजा संवर के यहाँ महारानी सिद्धार्था की कुक्षि में अहमिन्द्र पद से चय कर तीर्थंकर बालक ने अवतार लिया। अयोध्या नगरी में चारों ओर खुशियाँ छा गयीं। कुछ समय बाद माघ शुक्ला द्वादशी के दिन तीर्थंकर बालक ने जन्म लिया। जन्म से ही सम्यग्दृष्टि व मति–श्रुत–अवधि तीन ज्ञान से युक्त थे। स्वर्ग से इन्द्रों ने आकर जन्मोत्सव मनाया। धीरे–धीरे कुमारावस्था को पार करके युवावस्थाको प्राप्त किया। पिता की आज्ञानुसार राज्य का संचालन किया। जन्मदिन के दिन ही बादल को नष्ट होते देखकर सांसारिक जीवन से मोह भंग हो गया और वन में जाकर दीक्षा धारण की 18 वर्ष मौन पूर्वक साधना करते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी को केवलज्ञान प्राप्त किया और अंत समय में सम्मेद शिखर पर जाकर योग निरोध किया और वैशाख शुक्ला षष्ठी को निर्वाण पद प्राप्त किया।

Beauty to be useless-without virtue.

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
वैशाख शुक्ला षष्ठी	माघ शुक्ला द्वादशी	माघ शुक्ला द्वादशी	पौष शुक्ला चतुर्दशी	वैशाख शुक्ला षष्ठी

विशेषतायें

- संभवनाथ भगवान के बाद 10 लाख करोड़ सागर बीत जाने पर अभिनन्दननाथ भगवान हुए।
- अभिनन्दननाथ भगवान ने 36½ लाख पूर्व व 8 पूर्वांग तक राज्य किया।
- दीक्षा हेतु 'हस्तचित्रा' नामक पालकी द्वारा 'उग्र' नामक वन में गये थे।
- दीक्षा के बाद बेला अर्थात् दो उपवास करने के बाद आहार के लिए अयोध्या नगरी में गए, वहाँ राजा 'इन्द्रदत्त' ने प्रथम आहार कराया था।
- वज्रनाभि आदि 103 गणधर थे।
- इनकी गर्भ व मोक्ष की तिथि एक ही है तथा जन्म व दीक्षा तिथि भी एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. Welcome God के नाम से किन्हें जाना जाता है ?
2. Monkey कौन–से तीर्थंकर का चिह्न है ?
3. English Poem सुनाइये ?
4. अभिनंदननाथ भगवान ने दीक्षा के बाद कितने दिन के उपवास किए थे ?
5. अभिनंदननाथ भगवान की दीक्षा तिथि बताइए ?

5

सुमतिनाथ भगवान

सुमतिनाथ भगवान
(Wisemind God)
चिह्न-चकवा

English Poem

You are in my every thought,
let me lead life as you thought,
Sumatinath! Give wisdom nice,
So that I fall never twice.

पद्यानुवाद

हर पल जिसमें आप विचरते, ऐसा जीवन मेरा कर दें।
सुमतिनाथ वह सुमति देना, ताकि न भटकूँ फिर भव में।।

जन्म स्थान – अयोध्या नगरी
पिता का नाम – राजा मेघरथ
माता का नाम – रानी मंगला
शरीर की ऊँचाई – 300 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश   आयु – 48 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय   आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – पूर्वभव का स्मरण
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (अविचल कूट)
पूर्व पर्याय – वैजयन्त विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– वैजयन्त विमान के अहमिन्द्र पद से चय कर अयोध्या नगरी में राजा मेघरथ व रानी मंगला के आँगन में तीर्थंकर बालक आने वाला है। माता मंगला ने गज आदि 16 स्वप्न देखे थे माता की कुक्षि में बालक तीर्थंकर का अवतरण हुआ। धीरे–धीरे समय बीतता गया और चैत्र शुक्ला ग्यारस के दिन तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। इन्द्र ने बालक की सम्मति देखकर उसका नाम 'सुमति' रखा। कुमारावस्था बीत जाने पर योग्य कुलीन कन्याओं के साथ विवाह हुआ और राजा मेघरथ ने राज्य भार सौंप दिया। 19 लाख पूर्व व 12 पूर्वांग तक राज्य करते हो गये तब पूर्वभव के स्मरण से वैराग्य उत्पन्न हो गया, सभी विषय–वासनाओं की तिलांजलि देकर आत्म हित में प्रवृत्त हुए और दीक्षा धारण करके घोर तपश्चरण किया, केवलज्ञान प्राप्त करके भव्यों जीवों को मोक्ष मार्ग दिखाते हुए सम्मेद शिखर पर जाकर योग निरोध किया और अंत में सभी कर्मों का क्षय करते हुए मुक्ति को प्राप्त हुए।

विनम्रता के सागर हैं–गुरुवर ज्ञान की गागर हैं।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
श्रावण शुक्ला द्वितीया	चैत्र शुक्ला ग्यारस	चैत्र शुक्ला ग्यारस	चैत्र शुक्ला ग्यारस	चैत्र शुक्ला ग्यारस

विशेषतायें

- ये ऐसे तीर्थंकर हैं जिनके–जन्म, तप, ज्ञान और मोक्ष की तिथि एक ही है–चैत्र शुक्ला ग्यारस।
- अभिनन्दन स्वामी के बाद 9 लाख करोड़ सागर बीत जाने पर सुमतिनाथ भगवान हुए।
- 19 लाख पूर्व व 12 पूर्वांग तक राज्य किया।
- दीक्षा हेतु 'अभया' नामक पालकी से 'सहेतुक' वन में पहुँचे थे।
- दीक्षा के समय तेला अर्थात् तीन दिन के उपवास की प्रतिज्ञा की थी।
- प्रथम आहार 'सौमनस' नगर में 'द्युम्नद्युति' नामक राजा के यहाँ हुआ।
- अमर आदि 116 गणधर हुए थे।

अभ्यास प्रश्न-

1. ऐसे तीर्थंकर का नाम बताओ जिनका जन्म, तप, ज्ञान व मोक्ष तिथि एक ही है ?
2. सुमतिनाथ भगवान कौन–से आसन्न से मोक्ष गए थे ?
3. सुमतिनाथ भगवान का चिह्न बताइए ?
4. सुमतिनाथ भगवान ने दीक्षा के बाद कितने उपवास किए थे ?
5. सुमतिनाथ भगवान की Poem सुनाओ ?

6

पद्मप्रभ भगवान

पद्मप्रभ भगवान
(Lotus God)
चिह्न-लाल कमल

English Poem

I like you most supreme ded,
your face is rosy red,
padamprabh Swami so high,
You can forget how can I?

पद्यानुवाद

सर्वश्रेष्ठ पितु वंदन आपका, लाल गुलाबी शोभित है।
कैसे भूलूँ प्रभू आपको, पद्म समां जो मूरत है।।

जन्म स्थान – कौशाम्बी नगरी
पिता का नाम – राजा धारण
माता का नाम – रानी सुसीमा
शरीर की ऊँचाई – 250 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश | आयु – 30 लाख पूर्व
वर्ण – रक्त वर्ण | आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्‌गासन
वैराग्य का निमित्त – पूर्वभव का स्मरण
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (मोहन कूट)
पूर्व पर्याय – 9वें ग्रैवेयक के प्रीतिकर विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– भरत क्षेत्र की कौशाम्बी नगरी में राजा धारण व रानी सुसीमा के आँगन में बालक तीर्थंकर का आगमन हुआ। सौधर्म इन्द्र आदि देवों द्वारा पाण्डुक शिला पर अभिषेक किया गया, जन्मोत्सव मनाया गया। बालक के शरीर की प्रभा पद्म (कमल) के समान थी इसलिए इन्द्र ने उनका नाम 'पद्मप्रभ' रखा था। बालक पद्मप्रभ ने बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश किया, राजा धारण ने पद्मप्रभ को राज्य का भार सौंप दिया और अनेक सुन्दर सुशील कन्याओं के साथ विवाह हुआ। राज्य करते–करते एक दिन पूर्वभव का ज्ञान हो जाने से अंतरंग के नेत्र खुल गए, तभी उन्होंने अपने पुत्र को राज्य सौंपकर वन में निकल गए। मति–श्रुत–अवधि ज्ञान तो जन्म से ही थे, दीक्षा लेते ही मन:पर्यय ज्ञान प्रकट हो गया। 6 माह तक मौनपूर्वक साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया और धर्मोपदेश द्वारा अनेक जीवों का कल्याण करते हुए सम्मेदशिखर पहुँचे और फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी के दिन मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त किया।

चंद दिनों का जीवन है–देखो इसमें सुख कम है।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
कृष्णा षष्ठी	कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी	कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी	चैत्र शुक्ला पूर्णिमा	फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी

विशेषतायें

- सुमतिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 90 हजार करोड़ सागर बाद पद्मप्रभ भगवान का जन्म हुआ।
- दीक्षा हेतु 'निर्वृत्ति' नामक पालकी पर आरूढ़ होकर 'मनोहर नामक वन में गए।
- दीक्षा के बाद दो दिन के उपवास के किये, आहार के लिए 'वर्द्धमानपुर' नामक नगर गए, वहाँ राजा सोमदत्त ने प्रथम आहार कराया।
- वज्रचामर आदि 110 गणधर थे।
- इनकी जन्म व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. पद्मप्रभ भगवान का जन्म कहाँ हुआ ?
2. पद्मप्रभ भगवान को वैराग्य कैसे हुआ था ?
3. पद्मप्रभ भगवान के गणधर कितने थे ?
4. कितने माह तक इन्होंने मौन साधना की थी ?
5. पद्मप्रभ भगवान कौन-से कूट से मोक्ष गए ?

7

सुपार्श्वनाथ भगवान

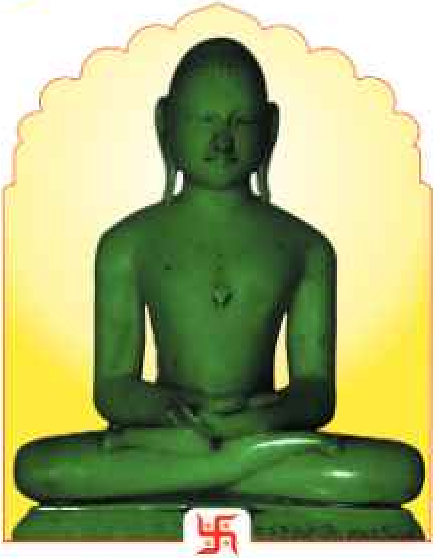

सुपार्श्वनाथ भगवान
(Super World God)
चिह्न-साथिया

English Poem

I am candle you are light,
I am eye and you are sight,
I am heart and beat you are,
Suparshwanath! not you are far.

पद्यानुवाद

मैं बाती तो प्रभु प्रकाश हैं, आँख हूँ मैं तो दृष्टि आप हैं।
दूर नहीं प्रभु पास आप हैं, इस जीवन की श्वाँस आप हैं।।

जन्म स्थान – बनारस नगरी
पिता का नाम – राजा सुप्रतिष्ठित
माता का नाम – रानी पृथ्वीसेना
शरीर की ऊँचाई – 200 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश | आयु – 20 लाख पूर्व
वर्ण – रक्त वर्ण | आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड़गासन
वैराग्य का निमित्त – सूखा वृक्ष देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (प्रभास कूट)
पूर्व पर्याय – मध्यम ग्रैवेयक के सुभद्र विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी – जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के काशी नामक देश में बनारस नगरी है, वहाँ राजा सुप्रतिष्ठित राज्य करते थे, उनके पृथ्वीसेना नामक रानी थी, उनके मध्यम ग्रैवेयक के सुभद्र विमान में अहमिन्द्र पद से चय कर एक बालक उत्पन्न हुआ। कुमार जब युवावस्था को प्राप्त हुआ तब राजा सुप्रतिष्ठित ने अनेक आर्य कन्याओं के साथ इनका विवाह करवाया। राज्य करते हुए कई दिन व्यतीत हो गए तब एक दिन संसार के विषय भोगों से विरक्ति हो गई और 'मनोगति' नामक पालकी पर सवार होकर सहेतुक नामक वन में जाकर नमः सिद्धेभ्यः कहते हुए पंच मुष्ठी केशलोंच करके दिगम्बर दीक्षा धारण कर ली। तीर्थंकरों के कोई गुरु नहीं होते है वे स्वयं ही स्वयंबुद्ध होते है। 9 वर्ष तक मौन पूर्वक साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया। समवशरण आदि विभूति के साथ विहार करते हुए धर्मोपदेश के माध्यम से अनेक जीवों का कल्याण किया। एक माह की आयु शेष रह गयी तब सम्मेद शिखर पर जाकर योग निरोध किया और अंत में 1000 मुनियों के साथ मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
भाद्रपद शुक्ला षष्ठी	ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी	ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी	फाल्गुन कृष्णा षष्ठी	फाल्गुन कृष्णा सप्तमी

विशेषतायें

- पद्मप्रभ भगवान के मोक्ष जाने के 9 हजार करोड़ सागर के बाद सुपार्श्वनाथ भगवान हुए।
- दीक्षा के बाद दो उपवास करके आहार के लिए 'सोमखेट' नामक नगर में गए, वहाँ राजा महेन्द्र दत्त ने प्रथम आहार कराया था।
- बल आदि 95 गणधर थे।
- इनकी जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. सुपार्श्वनाथ भगवान कहाँ से चयकर आये थे ?
2. दीक्षा के बाद कितने उपवास के बाद आहार ग्रहण किया था ?
3. सुपार्श्वनाथ भगवान का वर्ण कौनसा था ?
4. सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म किस नगरी में हुआ था ?
5. सुपार्श्वनाथ भगवान के साथ कितने मुनि मोक्ष पधारे ?

8

चन्द्रप्रभ भगवान

चन्द्रप्रभ भगवान
(Moon God)
चिह्न-चन्द्रमा

English Poem

Come Come come shining moon,
See you chandprabhuji soon,
why you look so dull and pale,
See of sarrow you can sail.

पद्यानुवाद

चंदा सम चमके जीवन में, अब चमकों मेरे चेतन में।
क्यों हम पर की शरण में जाये, जब प्रभु दु:ख से पार लगाये।।

जन्म स्थान	– चन्द्रपुरी नगरी
पिता का नाम	– राजा महासेन
माता का नाम	– रानी लक्ष्मणा
शरीर की ऊँचाई	– 150 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश	आयु– 10 लाख पूर्व
वर्ण – धवल वर्ण	आसन्न जिससे मोक्ष गये–खड़्गासन

वैराग्य का निमित्त– दर्पण में प्रतिबिम्ब देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (धवल कूट)
पूर्व पर्याय – वैजयन्त नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– काशी देश की चन्द्रपुरी नगरी में महाप्रतापी राजा महासेन राज्य करते थे, उनकी महारानी लक्ष्मणा देवी के गर्भ में वैजयन्त विमान के अहमिन्द्र पद से चय कर एक पुण्यात्मा जीव आया है, ऐसा शुभ समाचार सुनकर नगरी झुम उठी, नगरी में आन्दोत्सव मनाया गया, देवों द्वारा रत्नों की वर्षा हुई। 9 माह बाद पौष कृष्णा एकादशी के दिन प्रात:काल की बेला में तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। इन्द्र की आज्ञा से नगरी में बड़ी धूमधाम से जन्मोत्सव मनाया गया। बालक तीर्थंकर शुक्ल पक्ष के चन्द्र की भाँति दिन–प्रतिदिन वृद्धिंगत होते हुए युवावस्था को प्राप्त किया। एक दिन दर्पण में प्रतिबिम्ब देखकर वैराग्य उत्पन्न हो गया और देह को क्षणभंगुर व नश्वर जानकर दीक्षा हेतु वन में निकल पड़े। तीन महीने तक छद्मस्थ अवस्था में तप करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया अन्त में सम्मेद शिखर के 'ललित कूट' से निर्वाण को प्राप्त हुए।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
चैत्र शुक्ला पंचमी	पौष कृष्णा एकादशी	पौष कृष्णा एकादशी	फाल्गुन कृष्णा सप्तमी	फाल्गुन शुक्ला सप्तमी

विशेषतायें

- सुपार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 9 सौ करोड़ सागर बाद चन्द्रप्रभ भगवान हुए।
- दीक्षा हेतु 'विमला' नामक पालकी पर सवार होकर 'सर्वर्तुक' नामक वन में गए थे।
- दीक्षा के बाद दो दिन उपवास किया, बाद में आहार के लिए 'नलिनपुर' नगर में गये, वहाँ 'राजा सोमदत्त' ने प्रथम आहार कराया।
- नाग वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया।
- दत्त आदि 93 गणधर थे।
- इनकी जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. चन्द्रप्रभ भगवान का जन्म कौन-से देश में हुआ था ?
2. चन्द्रप्रभ भगवान कौन से वर्ण के थे ?
3. चन्द्रप्रभ भगवान के माता-पिता का नाम बताइए ?
4. चन्द्रप्रभ भगवान का English में नाम बताइए ?
5. चन्द्रप्रभ भगवान कौन-से कूट से मोक्ष गये ?

9

पुष्पदंतनाथ भगवान

पुष्पदंतनाथ भगवान
(Untouchable God)
चिह्न-मगर

English Poem

I like lovely number nine,
Suvidhinath Sawami! is mine,
Forget o god! my mistake,
my burdon you have to take.

पद्यानुवाद

नवम अंक है सुविधिनाथ का, अक्षय है अरु प्यारा है।
क्षमा करो प्रभु गलती मेरी, जग में यही सहारा है।।

जन्म स्थान – काकन्दी (किष्किन्धा) नगरी
पिता का नाम – राजा सुग्रीव
माता का नाम – रानी जयरामा
शरीर की ऊँचाई – 100 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश   आयु – 2 लाख पूर्व
वर्ण – धवल वर्ण   आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – उल्कापात देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (सुप्रभ कूट)
पूर्व पर्याय – 14वें प्राणत स्वर्ग में इन्द्र थे।

कहानी– भरत क्षेत्र की काकन्दी (किष्किन्धा) नगरी में राजा सुग्रीव राज्य करते थे, उनकी महारानी जयरामा के उदर में तीर्थंकर का जीव अवतरित होने वाला है, ऐसा जानकर देवों ने उनके आँगन में रत्नवृष्टि करना शुरु कर दिया, फाल्गुन कृष्णा नवमी को रात्रि के पिछले प्रहर में रानी जयरामा ने बैल, हाथी आदि 16 स्वप्न देखे, राजा सुग्रीव से स्वप्न फल जानकर जयरामा देवी के हर्ष का पार नहीं रहा, उसी समय मानो मोक्ष सुख प्राप्त हो गया हो। 9 माह बाद मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा के दिन तीर्थंकर बालक का अवतार हुआ। बचपन को छोड़कर युवावस्था में प्रवेश किया तब अनेक सुन्दर कन्याओं के साथ उनका विवाह हुआ। एक बार छत पर अचानक उल्कापात देखकर वैराग्य जाग उठा और सांसारिक सुख को बिजली की चमक के समान क्षणभंगुर जानकर वन में निकल गये और 4 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त किया और भव्य जीवों को मोक्ष का मार्ग दिखाते हुए अन्त में सम्मेदशिखर पर जाकर योग निरोध किया, आश्विन शुक्ला अष्टमी के दिन सिद्धालय में विराजमान हो गए।

सच मुश्किल से मिलता है–मिलते ही दिल खिलता है।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
फाल्गुन कृष्णा नवमी	मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा	मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा	कार्तिक शुक्ला द्वितीया	आश्विन शुक्ला अष्टमी

विशेषतायें

- भगवान चन्द्रप्रभु के मोक्ष जाने के बाद 90 करोड़ सागर बीत जाने पर भगवान पुष्पदन्त हुए।
- 50 हजार पूर्व व 28 पूर्वांग तक राज्य किया।
- दीक्षा हेतु 'सूर्यप्रभा' नामक पालकी पर सवार होकर 'पुष्पक' नामक वन में गये।
- दीक्षा के दो दिन बाद आहार के लिये 'शैलपुर' नामक नगर में गए, वहाँ राजा पुष्पमित्र ने प्रथम आहार कराया।
- विदर्भ आदि 88 गणधर थे।
- पुष्पदंतनाथ भगवान का दूसरा नाम–सुविधिनाथ भगवान है।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न–

1. पुष्पदंत भगवान का जन्म का किस नगरी में हुआ था ?
2. पुष्पदंत भगवान का दूसरा नाम क्या है ?
3. पुष्पदंत भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?
4. पुष्पदंत भगवान कहाँ से आये थे ?
5. पुष्पदंत भगवान कितने समय तक छद्मस्थ अवस्था में रहे ?

10

शीतलनाथ भगवान

शीतलनाथ भगवान
(Cool God)
चिह्न-कल्पवृक्ष

English Poem

Burning world is too much hot,
where to get cold water pot,
push me out of burning flame,
Sheetalnath! you same as name.

पद्यानुवाद

तपित विश्व है शीतल स्वामी, शीतलता को चाहूँ मैं।
नाम है जैसा काम दिखा दो, चरणों शीश झुकाऊँ मैं।।

जन्म स्थान – भद्रपुर नगरी
पिता का नाम – राजा दृढ़रथ
माता का नाम – रानी सुनन्दा
शरीर की ऊँचाई – 90 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश
आयु – 1 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय वर्ण
आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – हिम (ओस) को नष्ट होते देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (विद्युतवर कूट)
पूर्व पर्याय – 15वें आरण स्वर्ग में इन्द्र थे।

कहानी– 9वें तीर्थंकर के तीर्थ के अंत भाग में लाखों–करोड़ों वर्ष तक भारतक्षेत्र में धर्म का विच्छेद हो गया था तब भरतक्षेत्र में भद्रपुर नगरी में राजा दृढ़रथ व रानी सुनन्दा के राजमहल में 6 माह तक रत्नवर्षा होने के बाद चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन रात्रि के पिछले प्रहर में रानी सुनन्दा ने अतिमंगल 16 स्वप्न देखे, स्वप्न का फल जानकर रानी सुनन्दा हर्ष से भर गई। तीर्थंकर बालक के अवतरण होते ही धर्म का जो विरह हो गया था उसका अंत हुआ, धर्म की धारा पुनः प्रवाहित हो गई। 9 माह बाद माघ कृष्णा द्वादशी को बाल तीर्थंकर का जन्म हुआ। इनके अवतार से जीवों को शीतलता प्राप्त हुई, इसीलिए इन्द्र ने शीतलनाथ नाम से संबोधन किया। राज्य करते हुए एक दिन ओस की बूँद को नष्ट होते देखकर जीवन को क्षणभंगुर जानकर वैराग्य उत्पन्न हो गया। वन में जाकर दीक्षा धारण कर ली और 3 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। भव्य जीवों को धर्मोपदेश देते हुए अन्त में सम्मेद शिखर के विद्युतवर कूट से मोक्ष पधारे।

With faith in god-victory is yours.

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
चैत्र कृष्णा अष्टमी	माघ कृष्णा द्वादशी	माघ कृष्णा द्वादशी	पौष कृष्णा चतुर्दशी	आश्विन सुदि अष्टमी

विशेषतायें

- पुष्पदन्त स्वामी के मोक्ष जाने के बाद 9 करोड़ सागर बीत जाने पर भगवान शीतलनाथ हुए।
- इनके जन्म लेने के पहले पल्य के चौथाई भाग तक धर्म का विच्छेद हो गया था।
- दीक्षा हेतु 'शुक्रप्रभा' नामक पालकी पर सवार होकर 'सहेतुक' नामक वन में गये थे।
- दीक्षा के बाद पारणा के लिए 'अरिष्ट' नामक नगर में गए, वहाँ 'पुनर्वसु' नामक राजा ने प्रथम आहार कराया।
- 81 गणधर थे।
- इनके तीर्थ के अन्त समय में काल दोष से वक्ता, श्रोता, धर्मात्मा लोगों का अभाव होने से धर्म प्राय: लुप्त हो गया था।
- इनकी जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. शीतलनाथ भगवान के जन्म से पहले कितने समय तक धर्म का विच्छेद रहा ?
2. शीतलनाथ भगवान के गणधर कितने हैं ?
3. शीतलनाथ भगवान के वैराग्य का निमित्त बताइए ?
4. शीतलनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?
5. शीतलनाथ भगवान कौनसे आसन्न से मोक्ष गये थे ?

मेकअप जो भी करते हैं, बन्दर जैसे दिखते हैं।

11

श्रेयांसनाथ भगवान

श्रेयांसनाथ भगवान
(Well Fear God)
चिह्न-गेंड़ा

English Poem

Night is dark and journey long,
Shreyansnath! is sing your name,
singing makes my journey sweet,
reserve me a mukti seat.

पद्यानुवाद

रात अंधेरी यात्रा लम्बी, श्रेयस गाथा गाता हूँ।
प्रभुवर ऐसा वर दो मुझको, तव पद पाना चाहता हूँ।।

जन्म स्थान – सिंहपुर नगरी
पिता का नाम – राजा विष्णु
माता का नाम – महादेवी सुनन्दा
शरीर की ऊँचाई – 80 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश   आयु – 84 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्ण मय वर्ण   आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड़्गासन
वैराग्य का निमित्त – बसन्त ऋतु के परिवर्तन देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (संकुल कूट)
पूर्व पर्याय – 16वें अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान में इन्द्र थे।

कहानी– भरतक्षेत्र का काशी देश अत्यंत रमणीय है जो कि सुपार्श्वनाथ व चन्द्रप्रभ भगवन्तों के कल्याणकों से पावन हुआ था, उस काशी देश में सिंहपुरी नामक सुन्दर नगरी थी। वहाँ इक्ष्वाकुवंशी राजा विष्णु राज्य करते थे, उनकी महारानी का नाम सुनन्दा था, 16वें स्वर्ग से चय कर एक पुण्यात्मा ने माँ के गर्भ में प्रवेश किया। 9 माह बाद फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन बालक तीर्थंकर का जन्म हुआ। इन्द्रों ने धूमधाम से प्रभु का जन्मोत्सव मनाया। आप जीवों के हितरूप श्रेयमार्ग के रक्षक व पोषक हैं इसलिए आप सचमुच 'श्रेयांसनाथ' हैं। कुमार बालक धीरे–धीरे युवावस्था को प्राप्त हुए। महाराजा विष्णु ने उनका विवाह करवाया। 42 लाख वर्ष तक राज्य करते हुए एक दिन बसन्त ऋतु का परिवर्तन देखकर वैराग्य उत्पन्न हो गया, श्रेयस्कर नामक पुत्र को राज्य सौंपकर जिन दीक्षा धारण कर ली। 2 वर्षतक छद्मस्थ अवस्था में तप करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया, अनेक लोगों को श्रेय मार्ग दिखाते हुए अंत में सम्मेद शिखर के संकुल कूट से मोक्ष पधारे।

वाणी व्यक्ति का–व्यक्तित्व बताये रे।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी	फाल्गुन कृष्णा एकादशी	फाल्गुन कृष्णा एकादशी	माघ कृष्णा अमावस्या	श्रावण शुक्ला पुर्णिमा

विशेषतायें

- समस्त प्रजा को श्रेयोमार्ग अर्थात् मोक्ष मार्ग दिखाने वाले होने से 'श्रेयांस' नाम सार्थक हुआ।
- शीतलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 100 सागर, 66 लाख 26 हजार वर्ष कम 1 सागर बीत जाने पर श्रेयांसनाथ भगवान हुए थे।
- इनके जन्म लेने के पहले भारत वर्ष में ½ पल्य तक धर्म का विच्छेद हो गया था, उसे आपने दूर किया।
- दीक्षा हेतु 'विमलप्रभा' नामक पालकी पर सवार होकर 'मनोहर' नामक वन मे गए।
- दीक्षा के दो दिन बाद आहार के लिए 'सिद्धार्थ' नगर में गए, वहाँ राजा नन्द ने प्रथम आहार कराया।
- 77 गणधर थे।
- सिंहपुरी जिसे की आज सारनाथ के नाम से जाना जाता है।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. श्रेयांसनाथ भगवान का जन्म कौनसे देश में हुआ था ?
2. काशी देश में पहले कौन-कौन से तीर्थंकरों का अवतार हो चुका था ?
3. श्रेयांसनाम की सार्थकता बतलाइए ?
4. श्रेयांसनाथ भगवान के पुत्र का नाम बताइए ?
5. श्रेयांसनाथ भगवान का वर्ण कैसा था ?

12

वासुपूज्य भगवान

वासुपूज्य भगवान
(Habitable God)
चिह्न-भैंसा

English Poem

You are ocean of mercy,
Give me lovely master key,
can you see lack on my door,
Vasupujya Sawami I adore.

पद्यानुवाद

आप दया के सागर प्रभुवर, हमको मोक्ष की ताली दो।
मम गृह के सब ताले खोलो, भक्तों के वनमाली हो।।

जन्म स्थान – चम्पापुर नगरी
पिता का नाम – महाराजा वासुपूज्य
माता का नाम – रानी जयावती
शरीर की ऊँचाई – 70 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश आयु – 72 लाख पूर्व
वर्ण – केशर के समान पीत वर्ण आसन्न जिससे मोक्ष गये–पद्मासन
वैराग्य का निमित्त– पूर्वभव के स्मरण से
मोक्ष स्थल – मन्दारगिरी
पूर्व पर्याय – 10वें महाशुक्र स्वर्ग में इन्द्र थे।

कहानी– प्रथम बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर जिनके पाँचो कल्याणक चम्पापुरी में हुए, ऐसी चम्पापुर नगरी में महाराजा वसुपूज्य राज्य करते थे, उनकी महारानी जयावती के गर्भ में 10वें स्वर्ग से चय कर एक जीव अवतरित हुआ। गर्भ में आने से पहले देवों ने रत्नों की वर्षा की ओर माता ने 16 शुभ स्वप्न देखे थे। आपके अवतार से बाह्य दरिद्रता तो दूर हुई और जो धार्मिक दरिद्रता भरत क्षेत्र में आ गई थी, वह भी नष्ट हो गई। फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी के दिन राजा–रानी के आँगन में एक नया फूल खिला था। अर्थात् तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। बाल्यावस्था से धीरे–धीरे कुमारावस्था को प्राप्त किया। आपने न राज्य लेना स्वीकार किया और न ही विवाह करना स्वीकार किया। पूर्वभव के स्मरण से सभी वैभव आदि क्षणभंगुर लगने लगे और संसार के विषय भोगों का त्याग करके जिन दीक्षा धारण की। 1 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त किया। धर्म का उपदेश देते हुए विहार करते हुए अंत में रजतमाला नदी के निकट चम्पापुरी में मंदारगिरी के मनोहर वन में साँयकाल के समय में सम्पूर्ण कर्मों का क्षय करते हुए सिद्धालय में विराजमान हुए।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
आषाढ़ कृष्णा षष्ठी	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी	भाद्रपद शुक्ला द्वितीया	भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी

विशेषतायें

- श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्ष जाने के 54 सागर बाद वासुपूज्य स्वामी हुए।
- इनके लेने के पहले पल्य ¾ तक भारतवर्ष में धर्म का विच्छेद रहा था। आपके अवतरण से वह दूर हुआ।
- दीक्षा हेतु 'रत्नमाला' नामक पालकी पर सवार होकर 'मनोहर' नामक वन में गये थे।
- दीक्षा के बाद दो दिन के उपवास के बाद महानगर में आहार करने गये, वहाँ सुन्दर नामक राजा ने प्रथम आहार कराया।
- धर्म आदि 66 गणधर थे।
- इनके गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान–निर्वाण पाँचो कल्याणक चम्पापुरी नगरी में ही हुए।
- इनके साथ 94 मुनिराजों ने मुक्ति को प्राप्त किया।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न–

1. प्रथम बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर का नाम बताइए ?
2. ऐसे तीर्थंकर का नाम बताइए जिनके पाँचो कल्याणक एक ही नगरी में हुए ?
3. इनके जन्म से पहले कितने समय तक धर्म का विच्छेद रहा था ?
4. वासुपूज्य भगवान कौन से पर्वत से मुक्ति को प्राप्त हुए ?
5. वासुपूज्य भगवान कौन से आसन्न से मोक्ष गये थे ?

13

विमलनाथ भगवान

विमलनाथ भगवान
(Pure God)
चिह्न-सूकर

English Poem

Flowing water i have seen,
make my heart so pure and clean,
Vimalnath! wash my dirty mind,
Remove dust of every kind.

पद्यानुवाद

मलिन नीर सम मन है मेरा, सरल स्वच्छमय हृदय करो।
विमलनाथ जी विमलता देवें, अरि-रज-रहस विहीन करो।।

जन्म स्थान – कम्पिला नगरी
पिता का नाम – राजा कृतवर्मा
माता का नाम – रानी जयश्यामा
शरीर की ऊँचाई – 60 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश आयु – 60 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – हिमकणों का विलीन होते देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (सुवीर कूट)
पूर्व पर्याय – 12वें सहस्रार स्वर्ग में सहस्रार नामक विमान इन्द्र थे।

कहानी – भरतक्षेत्र की कम्पिला नगरी में राजा कृतवर्मा राज्य करते थे, उनकी महारानी का नाम जयश्यामा था। स्वर्गलोक से इन्द्र पर्याय से चय कर माता जयश्यामा के गर्भ में वह जीव आया। तब देवों द्वारा पूरी नगरी सजायी गयी और 9 माह तक रत्नों की वर्षा की। माघ शुक्ला चतुर्थी के दिन तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ, तब तीनों लोकों में आनन्द छा गया, देवों ने आकर जन्म कल्याणक मनाया। वासुपूज्य भगवान के शासन के अन्त भाग में लगभग एक पल्य तक धर्म का विच्छेद हो गया था, आपके जन्म होते ही दूर हो गया। युवावस्था में अनेक राजकुमारियों के साथ विवाह हुआ। एक दिन हिम कणों को विलीन होते देखकर वैराग्य हो गया और क्षणभंगुरता का ज्ञान होने से वन में जाकर दीक्षा धारण कर ली। 3 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर अपने विमल परिणामों द्वारा केवलज्ञान प्राप्त कियाऔर अंत में सम्मेद शिखर के सुवीर कूट से कर्मों का नाश करके सिद्धपद को प्राप्त हुए।

Anger is not only anger-but the seeds of cancer too.

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
ज्येष्ठ कृष्णा दशमी	माघ शुक्ला चतुर्थी	माघ शुक्ला चतुर्थी	माघ शुक्ला षष्ठी	आषाढ़ कृष्णा षष्ठी

विशेषतायें

- वासुपूज्य भगवान के मोक्ष जाने के 30 सागर बाद विमलनाथ भगवान हुए।
- इनके उत्पन्न होने से पहले एक पल्य तक भारतवर्ष में धर्म का विच्छेद हो गया था।
- तीन लाख वर्ष तक राज्य किया था।
- दीक्षा हेतु 'देवदत्त' नामक पालकी पर सवार होकर 'सहेतुक' नामक वन में गये।
- दीक्षा के दो दिन के बाद आहार के लिए 'नन्दपुर' गये, वहाँ राजा जयकुमार ने प्रथम आहार कराया।
- जामुन के पेड़ के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया।
- मन्दर आदि 55 गणधर थे।
- इनके काल में 'धर्म' नामक बलभद्र व 'स्वयंप्रभू' नामक नारायण हुए थे।
- जन्मतिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. विमलनाथ भगवान का जन्म कौन-सी नगरी में हुआ था ?
2. विमलनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?
3. विमलनाथ भगवान के काल में कौन-से बलभद्र व नारायण हुए थे ?
4. विमलनाथ भगवान के वैराग्य का निमित्त क्या था ?
5. कौन-से वृक्ष के नीचे इनको केवलज्ञान हुआ था ?

14

अनंतनाथ भगवान

अनंतनाथ भगवान
(Infinite God)
चिह्न-सेही

English Poem

So many stars are in the sky,
counting ever cant's i try,
ocean i cannot measure,
such is Anantnath's treasure.

पद्यानुवाद

नभ में तारे अगणित प्रभुवर, गणना में असमर्थ हूँ मैं।
अनंत प्रभु के सभी खजाने, कैसे मापूँ सिंधु को मैं।।

जन्म स्थान	– अयोध्या नगरी
पिता का नाम	– राजा सिंहसेन
माता का नाम	– रानी जयश्यामा
शरीर की ऊँचाई	– 50 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश	आयु – 30 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय	आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्‌गासन

वैराग्य का निमित्त – उल्कापात देखकर

मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (स्वयंभू कूट)

पूर्व पर्याय – 16वें अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान में देव थे

कहानी - अनन्त भवचक्र का अंत करने वाले अनंतनाथ भगवान 16वें स्वर्ग से च्युत होकर अयोध्या नगरी के महाराजा सिंहसेन व रानी जयश्यामा के आंगन में अवतरित होंगे। ऐसा माता द्वारा देखे हुए शुभ स्वप्नों का फल जानकर राजमहल में खुशिया छा गई। अब तक अयोध्या नगरी में चार तीर्थंकर अवतरित हो चुके थे, ये पाँचवे तीर्थंकर के अवतार होने की तैयारियाँ चल रही थी, देवों द्वारा रत्न बरसाये गये, अयोध्या नगरी को सजाया गया। ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी को बालक अनन्तनाथ का जन्म हुआ। इनके अवतार से पूर्व कई वर्षों तक भरतक्षेत्र में जैनधर्मका विच्छेद हो गया था, भगवान के अवतार लेते ही पुन: धर्मचक्र चलने लगा। 15 लाख वर्ष तक राज्य करते हुए हो गए तब उल्कापात देखकर उन्हें वैराग्य हो गया। जिस प्रकार उल्कापात क्षणभंगुर है वैसे ही समस्त वैभव क्षणभंगुर है, ऐसा चिंतन करते हुए वन में जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। दो वर्ष तक मौनपूर्वक साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया और करोड़ों जीवों को मोक्षमार्ग पर लगाते हुए अंत में सम्मेद शिखर से मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त किया।

सही बोलना सिखलाते हैं–उच्चारणाचार्य कहलाते हैं।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा	ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी	ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी	चैत्र कृष्णा अमावस्या	चैत्र कृष्णा अमावस्या

विशेषतायें

- विमलनाथ भगवान के बाद 9 सागर, पौन पल्य बीत जाने पर अनन्तनाथ भगवान हुए।
- दीक्षा हेतु 'सागर दत्ता' नामक पालकी पर सवार होकर 'सहेतुक' नामक वन में गये।
- तीन दिन उपवास के बाद साकेत (अयोध्यापुरी) नगरी में आहार के लिए गए वहाँ राजा 'विशाख' ने प्रथम आहार कराया।
- इनके उत्पन्न होने से पूर्व ¾ पल्य तक धर्म का विच्छेद हो गया था।
- जय आदि 50 गणधर हुए।
- इन्होंने 6 हजार मुनियों के साथ योग निरोध किया था।
- अयोध्या नगरी में इनसे पहले चार तीर्थंकर (ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनन्दननाथ व सुमतिनाथ) अवतरित हो चुके थे।
- अनन्तनाथ भगवान का शासन 4 सागरोपम तक चला, अन्तभाग में अर्द्धपल्योपम तक धर्म का विच्छेद रहा।
- भरतक्षेत्र में यह छठवीं बार धर्म विच्छेद हुआ।
- इनकी जन्मतिथि व दीक्षा तिथि एक है तथा केवलज्ञान तिथि व मोक्ष तिथि एक है।

अभ्यास प्रश्न-

1. अयोध्या नगरी में अनन्तनाथ भगवान से पूर्व कितने तीर्थंकरों का अवतार हो चुका था ?
2. अनन्तनाथ भगवान कौन से स्वर्ग से आये थे ?
3. अनन्तनाथ भगवान का शासन कितने समय तक चला था ?
4. अनन्तनाथ भगवान का चिह्न क्या है ?
5. अनन्तनाथ भगवान का वैराग्य का निमित्त क्या बना ?

Ego is the roots of-All sufferings.

15

धर्मनाथ भगवान

धर्मनाथ भगवान
(Religious God)
चिह्न-वज्रदण्ड

English Poem

Dharmnathji kill my karma,
you are teacher of dharma,
come on my lord almighty,
waiting for you egerly.

पद्यानुवाद

धर्म बताते धर्मनाथ जी, धर्म से कर्म का नाश करें।
सर्वशक्ति शाली हो प्रभुवर, हम सब आपकी आश करें।।

जन्म स्थान – रत्नपुर नगरी
पिता का नाम – राजा महासेन
माता का नाम – रानी सुव्रता
शरीर की ऊँचाई – 45 धनुष
वंश – कुरु वंश आयु– 10 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये–खड्गासन
वैराग्य का निमित्त– उल्कापात देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (सुदत्तवर कूट)
पूर्व पर्याय – सर्वार्थसिद्धि के सुरम्य विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– भरतक्षेत्र में अयोध्या के निकट 'रत्नपुरी' नामक सुन्दर नगरी है। वहाँ महाराजा महासेन राज्य किया करते थे, उनकी महारानी सुव्रता ने रात्रि के पिछले प्रहर में गज आदि 16 शुभ स्वप्न देखे। महाराजा महासेन ने स्वप्न का फल बताते हुए कहा कि तुम्हारे गर्भ में महापराक्रमी, गुणवान तीर्थंकर बालक आने वाला है, ऐसा जानकर दोनों राजा–रानी खुशियाँ मनाने लगे, देवों ने आकर रत्नों की वर्षा की, अनेक देवियाँ माता की सेवा करने के लिए स्वर्ग से आयी, माघ शुक्ला त्रयोदशी के दिन तीर्थंकर बालक का अवतरण हुआ। सौधर्म आदि देवों ने जन्मोत्सव मनाया,मेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक किया, यौवनावस्था में प्रवेश किया तब उनका विवाह हुआ और राज्याभिषेक हुआ। राजभोग करते हुए एक बार जन्मदिन के दिन छत पर मनोरम दृश्य देखते हुए उल्कापात देखकर क्षणभंगुरता का ज्ञान हो जाने से वैराग्य उत्पन्न हो गया। 1 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त किया, अनेक स्थान पर धर्मोपदेश करते हुए अंत में शाश्वत मुक्तिधाम सम्मेद शिखर पर जाकर मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त किया।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
वैशाख शुक्ला अष्टमी	माघ शुक्ला त्रयोदशी	माघ शुक्ला त्रयोदशी	पौष शुक्ला पूर्णिमा	ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी

विशेषतायें

- अनन्तनाथ भगवान के मोक्ष जाने के 4 सागर बाद भगवान धर्मनाथ हुए।
- धर्मनाथ भगवान की उत्पत्ति से पहले ½ पल्य तक धर्म का विच्छेद रहा।
- 5 लाख वर्ष तक राज्य किया।
- श्रृंगावती के साथ युवराज धर्मनाथ का विवाह हुआ।
- दीक्षा हेतु 'नागदत्ता' नामक पालकी पर सवार होकर शाल वन में पहुँचे।
- दीक्षा के 3 दिन बाद आहार के लिए पाटलिपुत्र (पटना) नगर में गये, वहाँ धन्यसेन राजा ने प्रथम आहार कराया।
- शालिवन में 'सप्तच्छद' वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया।
- अरिष्ट सेन आदि 43 गणधर थे।
- इनके तीर्थकाल में मघवा नामक तीसरे व सनतकुमार नामक चौथे चक्रवर्ती हुए थे। चक्रवर्ती मघवा के मोक्ष जाने के बाद सनतकुमार चक्रवर्ती हुए थे क्योंकि एक साथ दो चक्रवर्ती नहीं होते है।
- 800 मुनियों के साथ योग निरोध किया था।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. धर्मनाथ भगवान का अवतार किस नगरी में हुआ था ?
2. धर्मनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?
3. धर्मनाथ भगवान के माता-पिता का नाम बताइए ?
4. धर्मनाथ भगवान से पहले कितने समय तक धर्म का विच्छेद रहा था ?
5. धर्मनाथ भगवान के तीर्थकाल में कौन-कौन से चक्रवर्ती हुए थे ?

16

शान्तिनाथ भगवान

शान्तिनाथ भगवान
(Peaceful God)
चिह्न-हिरण

English Poem

Aradevi Ji's lovely son,
Give me peace and compassion,
In this world my own is none,
Shantinath ji is my only one.

पद्यानुवाद

ऐरा माँ के राज दुलारे, सहानुभूति व शान्ति करो।
कोई नहीं भव वन में मेरा, नाथ आप ही शरण वरो।।

जन्म स्थान – हस्तिनापुर नगरी
पिता का नाम – राजा विश्वसेन
माता का नाम – रानी ऐरादेवी
शरीर की ऊँचाई – 40 धनुष
वंश – सोम वंश आयु – 1 लाख पूर्व
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – दर्पण में मुँह देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (कुन्दप्रभ कूट)
पूर्व पर्याय – सर्वार्थसिद्धि विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– हस्तिनापुर के राजभवन के प्रांगण में अचानक रत्नों की वर्षा होने लगी, 6 माह बाद भाद्रपद कृष्णा सप्तमी के दिन महारानी ऐरादेवी ने अति मंगल सिंह, हाथी आदि 16 शुभ स्वप्न देखे, महाराजा विश्वसेन ने स्वप्न का फल बताया कि तुम्हारी कुक्षि में त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर का आगमन हुआ है। 9 माह बाद ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी के दिन सर्वोत्कृष्ट पुत्र का जन्म हुआ। धर्मनाथ भगवान के शासन काल के अन्त समय में ¼ पल्य तक जो धर्म का विच्छेद हो गया था, वह समाप्त हुआ, पुन: धर्म की धारा प्रवाहित हुई। कामदेव, चक्रवर्ती, तीर्थंकर के रूप में उनके शरीर की सुन्दरता सर्वोत्कृष्ट थी। विश्वसेन की दूसरी रानी से चक्रायुध नामक पुत्र हुआ था। दोनों राजकुमार युवावस्था को प्राप्त हुए, अनेक गुणवती राजकन्याओं के साथ उनके विवाह किये। महाराजा विश्वसेन ने शान्तिनाथ को साम्राज्य व चक्रायुध को युवराज पद दिया। एक बार जन्मदिन पर दर्पण में प्रतिबिम्ब के निमित्त से पूर्वभव का जातिस्मरण होते ही वैराग्य हो गया। शान्तिनाथ के साथ चक्रायुध ने भी दीक्षा धारण की। 16 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त किया। शान्तिनाथ तीर्थंकर और चक्रायुध गणधर हुए। जिस प्रकार शान्तिनाथ भगवान ने चक्रवर्ती पद का त्याग करके दीक्षा ग्रहण की वैसे ही तीर्थंकर पद का त्याग करके सम्मेद शिखर से मुक्ति को प्राप्त किया।

Honesty is the best policy.

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
भाद्रपद कृष्णा सप्तमी	ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी	ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी	पौष शुक्ला दशमी	ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी

विशेषतायें

- धर्मनाथ भगवान के बाद ¼ पल्य कम तीन सागर बीत जाने पर शान्तिनाथ भगवान हुए।
- शांतिनाथ भगवान के शरीर में ध्वजा, छत्र, शंक, चक्र आदि मंगल कारण चिह्न थे।
- 26 हजार वर्ष तक राज्य किया।
- दीक्षा हेतु 'सर्वार्थसिद्धि' पालकी पर सवार होकर 'सहस्राम्र' नामक वन में गये।
- दीक्षा के तीन दिन बाद आहार के लिए 'मन्दरपुर' में गये, वहाँ राजा सुमित्र ने प्रथम आहार कराया।
- चक्रायुध आदि 36 गणधर थे।
- इनकी जन्म, दीक्षा व मोक्ष तिथि एक ही है।
- शान्तिनाथ भगवान तीर्थंकर, चक्रवर्ती व कामदेव तीनों पदवीं के धारक थे।
- भरतक्षेत्र में ऋषभदेव से धर्मनाथ तक 15 तीर्थंकर और भरतादि 4 चक्रवर्ती हो चुके है, ये 16 वें तीर्थंकर, पंचम चक्रवर्ती व 12वें कामदेव थे।
- शान्तिनाथ भगवान को छ: खण्ड की दिग्विजय करने में 800 वर्ष लगे थे।
- शान्तिनाथ भगवान के पूर्व कई तीर्थंकरों के तीर्थकाल में कई बार धर्म का विच्छेद हुआ परन्तु इनके बाद आज तक धर्म का विच्छेद न तो हुआ और न हि पंचम काल के अंत तक होगा।

अभ्यास प्रश्न-

1. शान्तिनाथ भगवान का जन्म कौन-सी नगरी में हुआ ?
2. शान्तिनाथ भगवान के माता-पिता का नाम बताइए ?
3. शान्तिनाथ भगवान कौन-कौन से पद के धारी थे ?
4. शान्तिनाथ भगवान के वैराग्य का निमित्त क्या था ?
5. शान्तिनाथ भगवान कहाँ से मोक्ष गये ?

17

कुंथुनाथ भगवान

कुंथुनाथ भगवान
(Suitable God)
चिह्न-बकरा

English Poem

I am child innocent,
Kunthunath Ji excellent,
you are ocean i am drop,
I am bottom you are top.

पद्यानुवाद

अज्ञानी बालक मैं प्रभुवर, कुन्थुनाथ सर्वोच्च प्रभो।
जल बिन्दू मैं आप सिन्धु हैं, मैं धरती तुम गगन विभो।।

जन्म स्थान – हस्तिनापुर नगरी
पिता का नाम – राजा शूरसेन
माता का नाम – महारानी श्रीकान्ता
शरीर की ऊँचाई – 35 धनुष
वंश – कुरु वंश
आयु – 95 हजार वर्ष
वर्ण – स्वर्णमय
आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – जाति स्मरण
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (ज्ञानधर कूट)
पूर्व पर्याय – सर्वार्थसिद्धि के विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी – हस्तिनापुर नगरी में श्रावण कृष्णा द्वादशी के दिन सर्वार्थसिद्धि से चय कर एक जीव 16 मंगल स्वप्नों के दर्शनपूर्वक महादेवी श्रीकान्ता की कुक्षि में अवतरित हुआ। उस समय महाराजा शूरसेन वहाँ राज्य करते थे। 9 माह बाद वैशाख शुक्ला प्रतिपदा के दिन तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। सौधर्म इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरुपर्वत पर अभिषेक करके जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया गया। कुंथवा जैसे सूक्ष्म जीवों की रक्षा का उपदेश देने वाले है, इसलिए इन्द्र ने 'कुंथुनाथ' नाम रखा। रूप में कामदेव, वैभव में चक्रवर्ती, धर्म में तीर्थंकर ऐसी तीन पदवी के धारक थे। एक बार जन्मोत्सव के दिन जातिस्मरण हो जाने से राजभोगों से विरक्ति हो गई और संसार की अनित्यता आदि 12 भावनाओं का चिंतन करते हुए छः खण्ड की विभूति का क्षणमात्र में त्यागकर वन में जाकर दीक्षा ग्रहण की। 16 वर्ष मुनि अवस्था में साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया। धर्मोपदेश द्वारा कई जीवों को मोक्ष मार्ग पर लगाते हुए अंत में जन्म तिथि के दिन ही सम्मेद शिखर के ज्ञानधर कूट से मोक्ष पधारे।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
श्रावण कृष्णा दशमी	वैशाख शुक्ला प्रतिपदा	वैशाख शुक्ला प्रतिपदा	चैत्र शुक्ला तृतीया	वैशाख शुक्ला प्रतिपदा

विशेषतायें

- शान्तिनाथ भगवान के बाद आधा पल्य बीत जाने पर कुंथुनाथ भगवान हुए।
- दीक्षा हेतु 'विजया' नामक पालकी पर सवार होकर 'सहेतुक' नामक वन में गए थे।
- जन्म तिथि, दीक्षा तिथि, मोक्ष तिथि एक ही है।
- दीक्षा के बाद चौथे दिन आहार के लिए 'हस्तिनापुर' नगरी में गये, वहाँ धर्ममित्र नामक राजा ने प्रथम आहार कराया।
- 'तिलक' नामक वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया।
- स्वयम्भू आदि 35 गणधर थे।
- कुंथुनाथ भगवान तीर्थंकर, चक्रवर्ती व कामदेव तीनों पद के धारी थे।
- 17वें तीर्थंकर, 6वें चक्रवर्ती, 13वें कामदेव थे।

अभ्यास प्रश्न-

1. कुंथुनाथ भगवान कौन-से वंश के हुए ?
2. कुंथुनाथ भगवान का प्रथम आहार कौन-सी नगरी में हुआ ?
3. कुंथुनाथ भगवान के कौन-कौन से कल्याणक की तिथि एक है ?
4. कुंथुनाथ भगवान दीक्षा के लिए कौन-से वन में गए थे ?
5. कुंथुनाथ भगवान के नाम की सार्थकता बतलाइए ?

18

अरनाथ भगवान

अरनाथ भगवान
(Decency God)
चिह्न-मछली

English Poem

I am like a bird in cage,
I can not see my image,
Shri Arahnath my ambition,
I get final salvation.

पद्यानुवाद

पिंजरे का पंछी हूँ भगवन्, स्व-स्वरूप नहिं लख सकता।
हे अरनाथ प्रभु मैं चाहूँ, परम मुक्ति की समरसता।।

जन्म स्थान – हस्तिनापुर नगरी
पिता का नाम – राजा सुदर्शन
माता का नाम – रानी मित्रसेना
शरीर की ऊँचाई – 30 धनुष
वंश – सोम वंश आयु – 84 हजार वर्ष
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – शरद ऋतु के बादलों को नष्ट होते देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (नाटक कूट)
पूर्व पर्याय – वैजयन्त नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– हस्तिनापुर में भगवान शान्तिनाथ के वंशज राजा सुदर्शन राज्य करते थे। उनकी महारानी का नाम मित्रसेना था। अनुत्तर विमान के अहमिन्द्र की आयु 6 माह शेष रही तभी से ही राजभवन में प्रतिदिन रत्नों की वर्षा होने लगी, फाल्गुन कृष्णा तृतीया की पिछली रात्रि में माता ने शुभ 16 स्वप्न देखे और तीर्थंकर बालक गर्भ में आए। स्वर्गलोक से देवियाँ माता व पुत्र की सेवा करने के लिए आयीं। 9 माह बाद मगसिर शुक्ला चतुर्दशी को दिव्य पुत्र का जन्म हुआ। इन्द्रों द्वारा जन्मकल्याणक मनाया गया। युवावस्था में प्रवेश करने पर राजकुमार अरनाथ का विवाह अनेक राजकुमारियों के साथ हुआ। छः खण्ड पर विजय प्राप्त करके 7वें चक्रवर्ती हुए। एक दिन शरद ऋतु के बादलों को नष्ट होते देखकर वैराग्य हो गया। वैभव, शरीर व आयु को क्षणभंगुर जानकर चक्रवर्ती पद का त्याग करके मुनि दीक्षा को अंगीकार किया। 16 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर कठिन साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया, लाखों-करोड़ों जीवों को मोक्ष मार्ग पर लगाते हुए संसार के नाटक का अंत करके सम्मेद शिखर के नाटक कूट से मोक्ष पधारे।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
फाल्गुन कृष्णा तृतीया	मगसिर शुक्ला चतुर्दशी	मगसिर शुक्ला चतुर्दशी	कार्तिक शुक्ला द्वादशी	चैत्र कृष्णा अमावस्या

विशेषतायें

- कुंथुनाथ भगवान के बाद एक हजार करोड़ वर्ष कम चौथाई पल्य बीत जाने पर अरनाथ भगवान हुए।
- इन्होंने 21 हजार वर्ष तक राज्य किया।
- दीक्षा हेतु 'वैजयन्ती' नामक पालकी पर सवार होकर 'सहेतुक' नामक वन में गये।
- दीक्षा के दो दिन बाद 'चक्रपुर' नगर में आहार के लिए गए, वहाँ राजा अपराजित ने प्रथम आहार कराया।
- 'माकन्द–आम्र' नामक वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया।
- कुम्भार्प आदि 30 गणधर थे।
- अरनाथ भगवान भी तीर्थंकर, चक्रवर्ती व कामदेव तीन पद के धारी थे।
- 7वें चक्रवर्ती, 18 तीर्थंकर व 14 वें कामदेव थे।
- हस्तिनापुरी में एक के बाद एक, चार चक्रवर्ती व तीन तीर्थंकर हुए।
- अरनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद सुभौम नामक 8वाँ चक्रवर्ती हुआ जो कि धर्म की विराधना से नरक गया।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. अरनाथ भगवान कौन–से तीर्थंकर के वंशज थे ?
2. अरनाथ भगवान कौन–से नम्बर के चक्रवर्ती थे ?
3. अरनाथ भगवान का वैराग्य का निमित्त बताइए ?
4. अरनाथ भगवान किस कूट से मोक्ष गए ?
5. अरनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?

19

मल्लिनाथ भगवान

मल्लिनाथ भगवान
(Million God)
चिह्न-कलश

English Poem

Shop my birth and death cycle,
show Mallinath ji miracle,
Let me always stay with you,
leave this old home come to new.

पद्यानुवाद

जन्म-मरण रुक जाय प्रभु, ऐसा अतिशय होय।
रखो सदा चरणों प्रभु, नूतन गृह मम होय।।

जन्म स्थान – मिथिला नगरी
पिता का नाम – राजा कुम्भ
माता का नाम – महारानी प्रजापती
शरीर की ऊँचाई – 25 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश आयु – 55 हजार वर्ष
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – जाति स्मरण
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (संबल कूट)
पूर्व पर्याय – अपराजित नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– भरतक्षेत्र की मिथिला नगरी थी, वहाँ जैन धर्म के परम उपासक महाराज कुंभ राज्य करते थे। वे वास्तव में सम्यक्त्वादि गुणों से भरपूर कुंभ थे, उनकी पटरानी का नाम प्रजापती था। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन महारानी प्रजापती ने गज आदि 16 शुभ स्वप्न देखे और अनुत्तर विमान से चय कर माता के गर्भ में तीर्थंकर बालक का अवतरण हुआ है, महाराजा कुंभ से ऐसा फल जानकर नगरी में खुशियाँ छा गई। स्वर्ग से देवियों ने आकर माता की सेवा की। मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी के दिन तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। सौधर्म इन्द्र सहित अनेक देवों ने आन्दोत्सव मनाया। मेरुपर्वत पर तीर्थंकर बालक का जन्माभिषेक हुआ। मल्लिकुमार ने बचपन छोड़कर युवावस्था में प्रवेश किया। उनका शरीर वज्रसमान सुदृढ़, सर्वांग सुन्दर व उत्कृष्ट पुण्यरूप परमाणुओं से निर्मित था। मल्लिकुमार के विवाह की तैयारियाँ चल रही थीं, मल्लिकुमार दूल्हा बनकर राजभवन के द्वार से निकले तभी नगरी की सुन्दरता देखकर जाति स्मरण हो गया कि यह रचना तो अपराजित विमान जैसी है अंत में यह वैभव तो समाप्त ही होगा, क्षणभंगुरता का ज्ञान हो जाने से चित्त संसार से विरक्त हो गया। जन्मदिन, विवाह की तैयारी व वैराग्य का जैसे संगम सा हुआ था। उसी समय राजभवन छोड़कर वन में जाकर दीक्षा धारण कर ली, मात्र 6 दिन तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्रकट किया, प्रभु ने 54 हजार 900 वर्ष तक भव्य जीवों को कल्याण का उपदेश देते हुए सम्मेद शिखर के संवल कूट से सिद्ध पद प्राप्त किया।

समय और मृत्यु किसी का इंतजार नहीं करते।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
चैत्र शुक्ला प्रतिपदा	मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी	मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी	पौष शुक्ला द्वितीया	फाल्गुन शुक्ला पंचमी

विशेषतायें

- अरनाथ भगवान के बाद एक हजार करोड़ वर्ष बाद मल्लिनाथ भगवान हुए।
- विवाह के समय वैराग्य होना यह एक उनके जीवन की अद्भुत घटना है।
- कुमार अवस्था में दीक्षा ग्रहण करने वाले वासुपूज्य भगवान के बाद आप दूसरे बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर हुए।
- मिथिलापुरी में ही गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान चारों कल्याणक मनाये गये।
- दीक्षा हेतु 'जयन्त' नामक पालकी पर आरूढ़ होकर 'श्वेत' वन में पहुँचे।
- दीक्षा के बाद तीसरे दिन आहार के लिए 'मिथिलापुरी' गये, वहाँ राजा नन्दिषेण ने प्रथम आहार कराया।
- विशाख आदि 28 गणधर थे।
- इनका तीर्थकाल में पद्म नामक 9वें चक्रवर्ती हुए। विष्णुकुमार मुनिराज इन्हीं चक्री के पुत्र थे।
- सभी तीर्थंकरों में छद्मस्थ रूप से रहने का न्यूनतम काल मल्लिनाथ भगवान का ही था=6 दिन।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. मल्लिनाथ भगवान के कौन-कौन से कल्याणक मिथिलापुरी में हुए ?
2. मल्लिनाथ भगवान को दीक्षा के कितने दिन के बाद केवलज्ञान हुआ ?
3. मल्लिनाथ भगवान के जीवन में कौन-सा संगम हुआ था ?
4. मल्लिनाथ भगवान के तीर्थ काल में कौन से चक्रवर्ती हुए थे ?
5. पद्म नामक चक्रवर्ती के पुत्र का नाम बताओ जो मुनिराज थे ?

20

मुनिसुव्रतनाथ भगवान

मुनिसुव्रतनाथ भगवान
(Fasting ascdic God)
चिह्न-कछुआ

English Poem

Chhuk-chhuk-chhuk runing train,
world is full with sorrow pain,
open for my mukti gate
Shri munisuvrat Swami great.

पद्यानुवाद

छुक-छुक रेल चले यहाँ, दर्द भरा संसार जहाँ।
मुक्ति द्वार मम खोलिए, मुनिसुव्रत जिनराज महा।।

जन्म स्थान – राजगृह नगरी
पिता का नाम – राजा सुमित्र
माता का नाम – रानी सोमा
शरीर की ऊँचाई – 20 धनुष
वंश – हरिवंश आयु – 30 हजार वर्ष
वर्ण – स्वर्णमय आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – गजराज के वैराग्य का प्रसंग देखकर
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (निर्जर कूट)
पूर्व पर्याय – 14वें प्राणत स्वर्ग में इन्द्र थे।

कहानी– राजगृही नगरी में हरिवंश के राजा सुमित्र राज्य करते थे, उनकी महारानी का नाम सोमा था। एक दिन अचानक रत्नों की वर्षा होने लगी, इससे अनुमान लगाया गया की शुभ समाचार मिलने वाले हैं, 6 माह तक वर्षा होने के बाद स्वर्ग से चय कर किसी पुण्यात्मा ने 16 शुभ स्वप्नों के साथ माता सोम की कुक्षि में अवतार लिया। स्वप्नों का फल जानकर चारों ओर असीम आनन्द हुआ। 9 माह बाद वैशाख कृष्णा दशमी के दिन पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इन्द्रों द्वारा जन्मोत्सव मनाया गया। धीरे-धीरे बालक तीर्थंकर ने युवावस्था में प्रवेश किया अनेक उत्तम राजकन्याओं के साथ विवाह हुआ। 15 हजार वर्ष तक राज्य करते हुए, एक दिन गजराज के वैराग्य का प्रसंग देखकर वैराग्य हो गया और वन को निकल गए। 11 माह तक छद्मस्थ अवस्था में रहकर केवलज्ञान प्राप्त किया। भरत क्षेत्र में विचरण करके भव्य जीवों को धर्मोपदेश देते हुए अंत में सम्मेद शिखर के निर्जर कूट से मुक्ति को प्राप्त किया।

धरती अम्बर जिनका हार-विनम्र गुरु को नमन हजार।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
श्रावण कृष्णा द्वितीया	वैशाख कृष्णा दशमी	वैशाख कृष्णा दशमी	वैशाख कृष्णा नवमी	फाल्गुन कृष्णा द्वादशी

विशेषतायें

- मल्लिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बाद 54 लाख वर्ष बाद मुनिसुव्रतनाथ भगवान हुए।
- दीक्षा हेतु 'अपराजित' नामक पालकी पर सवार होकर 'नील' नामक वन में गये।
- दीक्षा के बाद चौथे दिन आहार के लिए 'राजगृही' नगरी में गये, वहाँ राजा वृषभसेन ने प्रथम आहार कराया।
- मल्लि आदि 18 गणधर थे।
- इनके काल में 10वें हरिषेण नामक चक्रवर्ती हुए।
- राम बलभद्र, लक्ष्मण नारायण, रावण प्रतिनारायण सभी इन्हीं के काल मे हुए।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. मुनिसुव्रतनाथ भगवान के माता-पिता का नाम बताइए ?
2. मुनिसुव्रतनाथ भगवान का वर्ण कैसा था ?
3. मुनिसुव्रतनाथ भगवान के काल में कौन से चक्रवर्ती हुए ?
4. राम, लक्ष्मण, रावण आदि कौन-से तीर्थंकर के काल में हुए ?
5. मुनिसुव्रतनाथ भगवान कौन-से कूट से मोक्ष गये ?

21

नमिनाथ भगवान

नमिनाथ भगवान
(Moisture God)
चिह्न-नील कमल

English Poem

I don't pray for worldly wealth,
Not for name or body health,
Naminath! Never lose faith,
Name on lips till final breath.

पद्यानुवाद

नहीं चाह धन की यहाँ, नहीं शरीर न चाह।
नमि प्रभु विश्वास है, जब तक घट में श्वास।।

जन्म स्थान – मिथिला नगरी
पिता का नाम – महाराज श्री विजय
माता का नाम – महारानी विप्पला
शरीर की ऊँचाई – 15 धनुष
वंश – इक्ष्वाकु वंश   आयु – 10 हजार वर्ष
वर्ण – स्वर्णमय   आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड़्गासन
वैराग्य का निमित्त – जाति स्मरण
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (मित्रधर कूट)
पूर्व पर्याय – अपराजित नामक विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– अपराजित विमान में अहमिन्द्र की आयु 6 माह शेष रह गई तब मिथिलापुरी के राजभवन के प्रांगण में दिव्य रत्नों की वर्षा होने लगी, तब वहाँ श्री विजय महाराज राज्य करते थे। उनकी महारानी विप्पला देवी ने आश्विन कृष्णा द्वितीया की रात्रि में 16 शुभ स्वप्न देखे और उसी समय स्वर्ग से चय कर उस अहमिन्द्र के जीव ने माता की कुक्षि में अवतरण लिया। महाराजा विजयराज ने स्वप्न का फल बताते हुए कहा कि तुम्हारी कुक्षि में एक बालक का अवतरण हुआ है जो कि जगत् पूज्य तीर्थंकर बनेगा। नगर में आनन्दोत्सव मनाया गया। देवियों ने आकर माता की सेवा की। आषाढ़ कृष्णा दशमी के दिन पुत्र का जन्म हुआ, सर्वत्र आनन्द छा गया, सौधर्म आदि इन्द्रों द्वारा मेरुपर्वत पर जन्माभिषेक किया गया। युवराज नमिनाथ को विजयरत्न ने राज्य का भार सौंप दिया। राज्य करते हुए एक बार जन्म दिवस के दिन जाति स्मरण से वैराग्य उत्पन्न हो गया। वन में जाकर दीक्षा धारण करके 9 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया। समवशरण आदि विभूति के साथ विहार करते हुए धर्मोपदेश द्वारा लाखों जीवों का कल्याण करते हुए अंत में सम्मेद शिखर के मित्र धर कूट से मुक्ति को प्राप्त किया।

मानो माया तजो अभी–प्रभु छाया को वरो अभी।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
आश्विन कृष्णा द्वितीया	आषाढ़ कृष्णा दशमी	आषाढ़ कृष्णा दशमी	मगसिर शुक्ला ग्यारस	वैशाख कृष्णा चतुर्दशी

विशेषतायें

- भगवान मुनिसुव्रतनाथ के मोक्ष जाने के 60 लाख वर्ष बीत जाने पर नमिनाथ भगवान हुए।
- दीक्षा हेतु 'उत्तर कुरु' नामक पालकी पर सवार होकर 'चित्रवन' नामक वन में पहुँचे।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।
- दीक्षा के बाद तीसरे दिन आहार के लिए वीरपुर नगर में गये, वहाँ राजा दत्त ने प्रथम आहार कराया।
- सुप्रभार्य आदि 17 गणधर थे।
- नमिनाथ भगवान के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान चारों कल्याणक अपनी ही मिथिला नगरी में मनाये गये थे, पहले मल्लिनाथ भगवान के भी चार कल्याणक इसी नगरी में मनाये गये थे।
- इनके शासन काल में जयसेन नामक 11वें चक्रवर्ती हुए।
- पूरे सम्मेद शिखर के टोंकों से जितने मुनि मोक्ष गए हैं उनसे भी ज्यादा इस मित्रधर टोंक से मोक्ष गए है। 900 कोड़ा कोड़ी, 1 लाख, 45 हजार, 742 मुनि।

अभ्यास प्रश्न-

1. नमिनाथ भगवान का जन्म कौन-सी नगरी में हुआ ?
2. नमिनाथ भगवान के पाँचो कल्याणकों में से कौन-कौन सी तिथि समान है ?
3. नमिनाथ भगवान की आयु कितनी थी ?
4. नमिनाथ भगवान की कितने गणधर थे ?
5. नमिनाथ भगवान की मोक्ष स्थली बताइए ?

22

नेमिनाथ भगवान

नेमिनाथ भगवान
(Infrequent God)
चिह्न-शंख

English Poem

In my heart you own a place,
that is like a special case,
I like neminath's glowing face,
Bless me god with supreme grace.

पद्यानुवाद

ममहिय में प्रभु आप हैं, यही बात है खास।
तव मुख ही देखा करूँ, दीजे आशीर्वाद।।

जन्म स्थान – शौर्यपुरी नगरी
पिता का नाम – राजा समुद्र विजय
माता का नाम – महारानी शिवा देवी
शरीर की ऊँचाई – 10धनुष
वंश – हरिवंश आयु– 1 हजार वर्ष
वर्ण –मयूर ग्रीवा के समान नीला, आसन्न जिससे मोक्ष गये–पद्मासन
वैराग्य का निमित्त– पशुओं का बंधन देखकर
मोक्ष स्थल – गिरनार पर्वत
पूर्व पर्याय – वैजयन्त नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र थे।

कहानी– शौर्यपुर के महाराजा समुद्रविजय व महारानी शिवादेवी के आँगन में अचानक रत्नों की वर्षा होना एक शुभ संकेत है, 6 महीने तक वर्षा के बाद कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन रात्रि के पिछले प्रहर में माता ने हाथी, शेर आदि 16 स्वप्न देखे, उसी समय स्वर्ग से चय कर एक जीव ने माता के गर्भ में अवतार लिया। महाराजा समुद्रविजय से स्वप्न का फल जाना कि माता की कुक्षि में जगतगुरु तीर्थंकर बालक का अवतार हुआ है। तभी शौर्यपुरी में खुशियाँ छा गई। 9 माह बाद श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन बालक तीर्थंकर का जन्म हुआ। इन्द्रों ने आकर जन्मोत्सव मनाया। श्री कृष्ण नेमिनाथ के चचेरे भाई थे। बालक नेमिनाथ ने धीरे–धीरे युवावस्था में प्रवेश किया। नेमिनाथ का विवाह जूनागढ़ के राजा उग्रसेन की पुत्री राजुल के साथ होना तय हो गया। श्री कृष्ण को पता चला कि नेमिनाथ मेरे से ज्यादा ताकतवर है तब राज्य के लोभ से नेमिनाथ को वैराग्य दिलाने के लिए एक षड़यंत्र रचा। श्रीकृष्ण ने जुनागढ़ के द्वार पर एक बाड़े में पशुओं को बँधवा दिया था, पूछने पर बताने को कहा कि ये पशु आपके विवाह में राजाओं को माँस खिलाने के लिए आए है, पशुओं का बंधन देखकर नेमिनाथ को वैराग्य हो गया, बारात वापस लौट गई, नेमिनाथ जी ने गिरनार पर्वत पर जाकर जिन दीक्षा धारण कर ली, राजुल भी पीछे–पीछे आ गई उसने भी आर्यिका दीक्षा स्वीकार कर ली। 56 दिन तक मौन साधना करते हुए शुक्ल ध्यान के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त किया और अंत में उसी गिरनार पर्वत पर आत्म साधना के बल से मुक्ति को प्राप्त हुए।

श्रद्धा के बिन भटकोगे–पर्यायों में अटकोगे।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
कार्तिक शुक्ला षष्ठी	श्रावण शुक्ला षष्ठी	श्रावण शुक्ला षष्ठी	आश्विन शुक्ला प्रतिपदा	आषाढ़ शुक्ला अष्टमी

विशेषतायें

- नेमिनाथ भगवान के दादा–दादी का नाम–अन्धकवृष्टि व सुभद्रा था।
- नेमिनाथ भगवान के 9 चाचाची व कुन्ती, माद्री नामक दो बुआ थी।
- भगवान नमिनाथ के बाद 5 लाख वर्ष बीत जाने पर नेमिनाथ भगवान हुए।
- नेमिनाथ भगवान के समय श्रीकृष्ण नारायण व बलराम बलभद्र थे।
- राजा उग्रसेन व रानी जयावती की पुत्री राजुल के साथ इनका विवाह तय हुआ था।
- दीक्षा हेतु 'देवकुरु' नामक पालकी पर सवार होकर रेवतक (गिरनार) पर गये थे, उस वन का नाम 'सहस्राम्र' था।
- दीक्षा के तीन दिन बाद आहार के लिए द्वारिका नगरी में गए वहाँ वरदत्त नामक श्रावक ने प्रथम आहार कराया।
- वरदत्त आदि 11 गणधर थे।
- नेमिनाथ भगवान के शासन काल में 11वें ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती हुए। धर्म की विराधना के कारण नरक में गया।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न–

1. नेमिनाथ भगवान का जन्म स्थान व मोक्ष स्थान बताइए?
2. नेमिनाथ भगवान का वर्ण कैसा था?
3. नेमिनाथ भगवान का विवाह किसके साथ तय हुआ था?
4. नेमिनाथ भगवान के काल में नारायण व बलभद्र कौन थे?
5. नेमिनाथ भगवान को वैराग्य दिलाने में षड़यंत्र किसने रचा था?

ज्ञान के बिना वैराग्य नहीं होता।

23

पार्श्वनाथ भगवान

पार्श्वनाथ भगवान
(Paralled God)
चिह्न-सर्प

English Poem

Kamtha harmed you not the less,
Blessed you him with forgive ness,
oh Parashwanath! give me patience,
can not move me disturbance.

पद्यानुवाद

किया कमठ उपसर्ग बहु, क्षमा किया जिनदेव।
कष्टों में भक्ति करूँ, ऐसा वर प्रभु देव।।

जन्म स्थान – बनारस नगरी
पिता का नाम – राजा अवश्सेन
माता का नाम – रानी वामादेवी
शरीर की ऊँचाई – 9 हाथ
वंश – उग्र वंश आयु – 100 वर्ष
वर्ण – हरित वर्ण आसन्न जिससे मोक्ष गये – खड्गासन
वैराग्य का निमित्त – जाति स्मरण द्वारा
मोक्ष स्थल – सम्मेद शिखर (स्वर्णभद्र कूट)
पूर्व पर्याय – आनत स्वर्ग में इन्द्र थे।

कहानी– भरत क्षेत्र के काशी देश में गंगा नदी के किनारे वाराणसी (बनारस) नगरी है। इस नगरी में 7वें सुपार्श्वनाथ भगवान अवतरित हो चुके थे। एक दिन राजभवनके प्रांगन में रत्नों की वर्षा होने लगी। उस समय वहाँ राजा अश्वसेन राज्य करते थे, उनकी महारानी का नाम वामादेवी था। सभी नगर वासी जान गये थे कि तीर्थंकर के अवतरण होने के चिह्न दिखाई दे रहे हैं। सारी नगरी बहुत ही सुन्दर शोभायमान हो रही थी। वैशाख कृष्णा द्वितीया के दिन रात्रि के पिछले प्रहर में गज आदि 16 शुभ स्वप्नों के साथ तीर्थंकर बालक का माता की कुक्षि में अवतरण हुआ। वामादेवी राजा अश्वसेन से स्वप्न का फल जानकर बहुत हर्षित हुई। 9 माह बाद पौष कृष्णा एकादशी के दिन तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ, इन्द्रों ने आकर तीर्थंकर बालक का जन्माभिषेक करके जन्मोत्सव मनाया। जब बाल अवस्था से धीरे–धीरे युवावस्था में प्रवेश किया तब माता–पिता ने विवाह का अनुरोध किया परन्तु पार्श्वकुमार ने अनिच्छा प्रदर्शित की। पार्श्वकुमार ने जलते हुए नाग–नागिन को णमोकार मंत्र सुनाया, जिसके प्रभाव से वे स्वर्ग में धरणेन्द्र–पद्मावती बने। जन्मदिवस के दिन जाति स्मरण से वैराग्य उत्पन्न हो गया। भव से विमुख और मोक्ष के सम्मुख हुए पार्श्व कुमार ने वैराग्य भावना भाते हुए दीक्षा ग्रहण कर ली। एक दिन ध्यानस्थ मुनिराज पर संवर नामक देव ने जो कि कमठ का जीव था उसने घोर उपसर्ग किया, प्रभु समतापूर्वक सहन करते रहे धरणेन्द्र–पद्मावती ने उपसर्ग दूर किया, जैसे ही उपसर्ग दूर हुआ केवलज्ञान प्रकट हो गया। 70 वर्ष तक समवशरण आदि विभूति के साथ विहार करते हुए अंत में सम्मेदशिखर के स्वर्णभद्र कूट से मुक्ति को प्राप्त किया।

गुरुवर ज्ञान दिलाते हैं–सही राह दिखलाते हैं।

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
वैशाख कृष्णा द्वितीया	पौष कृष्णा एकादशी	पौष कृष्णा एकादशी	चैत्र कृष्णा चतुर्थी	श्रावण शुक्ला सप्तमी

विशेषतायें

- नेमिनाथ भगवान के बाद 83 हजार 750 वर्ष बीत जाने पर पार्श्वनाथ भगवान हुए।
- पार्श्वनाथ भगवान के नाना का नाम – महीपाल (जो कि पत्नी के विवाह से दु:खी होकर पंचाग्नि तप करने लगा था)।
- महीपाल कमठ का जीव ही था।
- महीपाल मरकर काल संवर नामक ज्योतिषी देव हुआ था जिसने पार्श्वनाथ भगवान पर उपसर्ग किया था।
- दीक्षा हेतु 'विमला' नामक पालकी पर सवार होकर 'अश्व' वन में गये थे।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।
- दीक्षा के बाद चौथे दिन आहार के लिए 'गुलमसेटपुर' में गए, वहाँ राजा धन्य ने प्रथम आहार कराया।
- 4 माह छद्मस्थ अवस्था में रहे।
- स्वयम्भू आदि 10 गणधर थे।
- पार्श्वनाथ भगवान बाल ब्रह्मचारी थे, सम्मेद शिखर से मोक्ष जाने वाले अंतिम तीर्थंकर थे।
- भारत में आधे से ज्यादा तीर्थ क्षेत्र पार्श्वनाथ भगवान के हैं।
- जन्म तिथि व दीक्षा तिथि एक ही है।

अभ्यास प्रश्न-

1. पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कौन–से वंश में हुआ था ?
2. पार्श्वनाथ भगवान के नाना का नाम क्या था ?
3. पार्श्वनाथ भगवान ने किनको णमोकार मंत्र सुनाया था ?
4. पार्श्वनाथ भगवान पर कौन से देव ने उपसर्ग किया ?
5. पार्श्वनाथ भगवान से पहले कौन–से तीर्थंकर का अवतार बनारस नगरी में हो चुका था ?

24

महावीर भगवान

महावीर भगवान
(Warrior God)
चिह्न-सिंह

English Poem

Kingdom palace ornament,
you had but no attachment,
left you all oh mahaveer brave,
give me little what you have.

पद्यानुवाद

राज्य संपदा प्रभु सुलभ, नहिं इनसे मम मोह।
महाबली मम दीजिए, जो तव अन्तर होय।।

जन्म स्थान – कुण्डलपुर
पिता का नाम – राजा सिद्धार्थ
माता का नाम – रानी प्रियकारिणी (त्रिशला)
शरीर की ऊँचाई – 7 हाथ
वंश – नाग वंश   आयु – 72 वर्ष
वर्ण – स्वर्णमय   आसन्न जिससे मोक्ष गये – पद्मासन
वैराग्य का निमित्त – पूर्वभव के स्मरण से
मोक्ष स्थल – पावापुर
पूर्व पर्याय – 16वें अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान में इन्द्र थे।

कहानी– भारत देश की कुण्डलपुर नगरी में महाराजा सिद्धार्थ राज्य करते थे, उनकी महारानी त्रिशलादेवी गुणवती व अद्वितीय नारी थी। आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन रात्रि के पिछले प्रहर में माता ने 16 शुभ स्वप्न देखे, उसी समय 16वें स्वर्ग से चयकर महावीर प्रभु की मंगल आत्मा ने माता की कुक्षि में अवतार लिया। धीरे–धीरे समय आने पर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन बालक तीर्थंकर का जन्म हुआ। तीनों लोकों में आनन्द सा छा गया, नरकों के जीवों को भी एक पल के लिए शान्ति का अनुभव हुआ। इन्द्रों ने आकर जन्मोत्सव मनाया, मेरुपर्वत पर जन्माभिषेक किया। विभिन्न घटनाओं द्वारा उनके वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्धमान, महावीर ये पाँच नाम थे। इन्होंने न तो विवाह किया और न ही राज्य किया। पूर्वभव के स्मरण से वैराग्य उत्पन्न हो गया, वन में जाकर दीक्षा धारण करके 12 वर्ष तक मौन साधना करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया। गणधर के अभाव में 66 दिन तक दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। गौतम स्वामी जब गणधर पद पर आसीन हुए तब दिव्य ध्वनि खिरी और अनेक देशों में विहार करते हुए अंत में पावापुर के पद्म सरोवर से मुक्ति को प्राप्त हुए।

Religion bridge-two hearts together.

पंचकल्याणक तिथियाँ

गर्भ तिथि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	मोक्ष तिथि
आषाढ़ शुक्ला षष्ठी	चैत्र शुक्ला त्रयोदशी	मगसिर कृष्णा दशमी	वैशाख शुक्ला दशमी	कार्तिक कृष्णा अमावस्या

विशेषतायें

- पूर्व पर्याय का जीव पुरुरवा भील को सागरसेन नामक मुनिराज ने उपदेश दिया था, जिससे उसने मद्य, मांस, मधु का त्याग किया था।
- महावीर भगवान के जीव को पूर्व पर्याय में सिंह अवस्था में अजितंजय व अमितगुण मुनिराज ने बताया कि तुम 10वे भव में तीर्थंकर महावीर बनोगे।
- महारानी त्रिशला राजा चेटक की पुत्री थी।
- राजा चेटक के त्रिशला आदि 7 पुत्रियाँ थीं।
- पार्श्वनाथ स्वामी के मोक्ष जाने के बाद 2 ½ सौ वर्ष बाद महावीर भगवान हुए।
- वर्धमान नाम बचपन से ही था, जो कि माता ने रखा था।
- अतिवीर नाम– सौधर्म इन्द्र जब अभिषेक कर रहा था तब उसके मन में शंका हुई कि इतना छोटा बालक इतने बड़े कलशों का जल कैसे सहन कर पायेगा तभी भगवान ने अपने दाँये पैर का अँगूठा दबा दिया जिससे सुमेरु पर्वत भी कम्पायमान हुआ, उस समय उनका नाम अतिवीर रखा गया।
- सन्मति नाम– जब ये पालने में झूल रहे थे, उस समय संजय–विजय नामक ऋद्धिधारी मुनिराज के मन में जिज्ञासा थी, जैसे ही उनकी दृष्टि तीर्थंकर के पालने पर पड़ी उनकी शंका का समाधान हो गया, तब मुनिराज ने उनका नाम 'सन्मति' रखा।
- वीर नाम– एक बार नगर में हाथी पागल हो गया था, सारे लोग इधर–उधर भाग रहे थे, वर्धमान जैसे ही उस हाथी के सामने आए वैसे ही हाथी शांत हो गया, उस समय लोगों ने उन्हें 'वीर' नाम से पुकारा।
- महावीर नाम– संगम नामक देव ने कुमार वर्धमान के बलवान, शूरवीर, साहस की परीक्षा लेने के लिए भयंकर सर्प का रूप धारण करके वृक्ष पर चढ़े वर्धमान पर फुंकार मारता हुआ जड़ से स्कन्ध तक लिपट गया पर वर्धमान ने धैर्य नहीं छोड़ा तब देव हारकर चरणों में गिर गया। इस घटना से उनका नाम महावीर पड़ा।
- दीक्षा हेतु 'चन्द्रप्रभा' नामक पालकी पर सवार होकर 'षण्डवन' में गये थे।

नेलपेंट लगाते हैं–वो राक्षस हो जाते हैं।

- दीक्षा के दूसरे दिन आहार के लिए कुलग्राम में गए, वहाँ कुल–भूपाल ने प्रथम आहार कराया।
- इनके समय में गौतम बुद्ध हुए थे। गौतम बुद्ध के अनुयायी 'बौद्ध' व महावीर के अनुयायी 'जैन' कहलाते थे।
- इनके प्रभाव से राजा श्रेणिक जैसे कट्टर बौद्ध भी महावीर के अनुयायी बन गये थे।
- भगवान महावीर के समवशरण का मानस्तम्भ देखते ही इन्द्रभूति गौतम का मान भंग हो गया था, वही प्रथम गणधर हुए थे।
- इन्द्रभूति गौतम आदि 10 गणधर थे।
- भगवान महावीर विहार करते हुए राजगृह नगर के विपुलाचल पर्वत पर समवशरण सहित विराजमान थे तब वहाँ के राजा श्रेणिक थे।
- राजा श्रेणिक की पत्नी चेलना महावीर भगवान की मौसी थी।
- 24 तीर्थंकरों में से आहार लेने की सबसे कठिन प्रतिज्ञा भगवान महावीर ने ली थी, ऐसी प्रतिज्ञा आज तक किन्हीं भी मुनिराज ने नहीं ली। वह प्रतिज्ञा थी राजकुमारी हो, सिर मुड़ा हो, बेड़ियों से जकड़ी हो, आँखों से अश्रुधारा बह रही हो, ऐसी महिला पड़गाहन करेगी तो आहार को जायेंगे। अत: चन्दनबाला जो उनकी मौसी थी उसने भगवान महावीर का पड़गाहन किया और आहार कराया।
- भगवान महावीर जब मोक्ष गये तब चतुर्थकाल के 3 वर्ष 8 माह 15 दिन शेष रह गये थे।
- भगवान महावीर के बाद गौतम स्वामी, सुधर्म स्वामी व जम्बूस्वामी तीन केवली और हुए जो अंतिम केवली कहलाये।
- भगवान महावीर ने 12 वर्ष के मुनि काल में सिर्फ 364 दिन आहार किया।

अभ्यास प्रश्न–

1. महावीर भगवान का जन्म स्थान व मोक्ष स्थान बताइए?
2. महावीर भगवान के प्रथम गणधर का नाम बताइए?
3. राजा श्रेणिक पूर्व में कौन–से धर्म के अनुयायी थे?
4. महावीर भगवान की माता त्रिशला के पिता का नाम क्या था?
5. राजा श्रेणिक की पत्नी रानी चेलना महावीर भगवान की क्या लगती थी?

सामान्य से सभी तीर्थंकरों की विशेषताऐं

- प्रत्येक तीर्थंकर की माता बालक के गर्भ में आने से पहले 16 स्वप्न देखती है। वे 16 स्वप्न है– 1. सफेद हाथी, 2. वृषभ, 3. उछलता शेर, 4. नाना प्रकार के रत्नों जड़ित स्वर्ण कलश जो जल से भरा था और उससे लक्ष्मी का अभिषेक देखा, 5. दो माला आकाश में लटकी हुई, 6. चन्द्रमा, 7. उगता सूर्य, 8. जल क्रीड़ा करते दो मीन, 9. दो स्वर्ण कलश, 10. सरोवर, 11. कल्लोल करते हुए बढता समुद्र, 12. सिंह के समान पाहे है जिसका ऐसा सिंहासन, 13. देवताओं का विमान, 14. नागेन्द्र का भवन, 15. महारत्नों की राशि, 16. निर्धूम अग्नि।
- सभी तीर्थंकरों के जन्म से पूर्व 15 माह तक प्रतिदिन चारों संध्याओं में 14 करोड़ रत्नों की वृष्टि होती है।
- सभी तीर्थंकर जन्म से ही सम्यग्दृष्टि व तीन ज्ञान के धारी होते है, और दीक्षा लेते ही मन:पर्यय ज्ञान भी प्रकट हो जाता है।
- सभी तीर्थंकरों का सौधर्म इन्द्र द्वारा सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक होता है।
- तीर्थंकर माँ का दूध नहीं पीते हैं।
- तीर्थंकर स्वर्गों से इन्द्रों द्वारा लाये हुए वस्त्राभूषण व भोजन पान ही ग्रहण करते हैं किन्तु दीक्षा के पश्चात् मनुष्य व श्रावक द्वारा प्रदत्त आहार ही ग्रहण करते हैं।
- आदिनाथ भगवान ने इक्षु रस का आहार लिया था, शेष तीर्थंकरों ने क्षीरान्न अर्थात् खीर का आहार लिया था।
- जहाँ तीर्थंकर के आहार होते हैं, वहाँ पंचाश्चर्य होते हैं वे हैं–रत्नवृष्टि, देव दुन्दुभि, पुष्पवृष्टि, सुगन्धित मन्द पवन, जय–जय घोष।
- तीर्थंकरों की आयु पूर्व में दी गई है, पूर्व अर्थात् 84 लाख वर्षों का एक पूर्वांग व 84 लाख पूर्वांग का एक पूर्व होता है।

  जैसे – आदिनाथ भगवान की आयु 84 लाख पूर्व थी=84 ला. X 84 ला. X 84 ला.

  = 592704000000000000000 वर्ष (पाँच हजार नौ सो सत्ताईस शंख चार पद्म वर्ष)

  इसी प्रकार शेष तीर्थंकरों की जानना चाहिए।
- दीक्षा के बाद छद्मस्थ अवस्था अर्थात् दीक्षा से केवलज्ञान होने तक मौन साधना करते हैं।
- तीर्थंकरों को विद्या प्राप्ति के लिए कहीं नहीं जाना पड़ता, वे स्वयं ही स्वयंबुद्ध जगत गुरु होते हैं।
- तप कल्याणक को निष्क्रमण कल्याणक भी कहते हैं।
- प्रत्येक तीर्थंकर के समय में 10–10 अन्तकृत केवली होते हैं।

- महावीर भगवान को छोड़कर शेष सभी तीर्थंकरों को जन्म दिवस के दिन ही वैराग्य हुआ था।
- अनंत चतुष्टय – ज्ञान, अनन्त, अनन्त सुख, दर्श अनंत प्रमाण।
  बल अनन्त अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान।।

अनंत ज्ञान, अनंत सुख, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य ये चार अनंत चतुष्टय प्रकट होते हैं।

- सभी तीर्थंकरों के अरहंत अवस्था में 46 मूलगुण होते हैं। किन्तु सामान्य अरहंत के जन्म के 10 अतिशय रहित 36 मुलगुण होते हैं।

वे है– तीर्थंकरों 46 मुलगुण– चौतीसों अतिशय सहित प्रातिहार्य पुनि आठ।
अनन्त चतुष्टय गुण सहित, छियालीसा पाठ।।

34 अतिशय + 8 प्रातिहार्य + 4 अनन्त चतुष्टय =46

जन्म के 10 अतिशय – अतिशय रुप सुगन्ध तन, नहिं पसेव निहार।
प्रियहित वचन अतुल बल, रुधिर श्वेत आकार।।
लच्छन सहसरु आठ तन, समचतुष्क संठान।
वज्रवृषभ नाराच जुत, यह जनमत दश जान।।

सुन्दर शरीर का होना सुगन्धमय शरीर का होना, पसीना नहीं आना, मल–मूत्र नहीं आना, हित–मित–प्रिय वचन, अतुल बल, सफेद रक्त, शरीर में 1008 लक्षण होना, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभ नाराच संहनन ये अतिशय जन्म से ही होते हैं।

केवलज्ञान के 10 अतिशय– योजन शत इक में सुभिख, गगन गमन मुख चार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार।।
सब विद्या ईश्वर पनों, नाहिं बढ़े नख केश।
अनिमिष दृग छाया रहित, दश केवल के वेश।।

100 योजन तक सुभिक्ष होना,आकाश में गमन करना, चारों दिशा में मुख का दिखना, दया का भाव होना, उपसर्ग का नहीं होना, कवलाहार नहीं होना, समस्त विद्याओं में ईश्वरपना होना, नख–केशों का नहीं बढ़ना, पलके नहीं झपकना, शरीर की छाया नहीं पड़ना, ये अतिशय केवलज्ञान होते ही प्रकट हो जाते हैं।

देवकृत 14 अतिशय– देवरचित है चार दिश, अर्धमागधि भाष।
आपस माही मित्रता, निरमल दिश आकाश।।
होत फूल–फल ऋतु सब, पृथ्वी काँच समान।
चरण–कमल तल कमल हैं, नभते जय–जयमाल।।
मन्द सुगन्ध बयारि पुनि, गंधोदक की वृष्टि।
भूमिविषैं कण्टक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि।।

धर्मचक्र आगे रहे, पुनि वसु मंगल सार।
अतिशय श्री अरिहंत के, ये चौतीस प्रकार।।

- अष्ट प्रातिहार्य–

  तरु अशोक के निकट में सिंहासन छविदार, तीन छत्र सिर पर लसै, भामण्डल पिछवार।
  दिव्यध्वनि मुखतै खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होए, ढोरै चौंसठ चमर जख बाजै दुन्दुभि जोय।।

  अशोक वृक्ष, सिंहासन, तीन छत्र, भामण्डल, दिव्यध्वनि, पुष्पवृष्टि, चौंसठ चंमर ढुरना, दुन्दुभि बाजे बजना इन आठ प्रातिहार्य से सुशोभित होते हैं।
- धर्म विच्छेद अर्थात् धर्म का अभाव हो जाना। उस समय भरत क्षेत्र में कोई भी मुनि–आर्यिका–श्रावक–श्राविका नहीं रहते।
- शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ व अरहनाथ भगवान तीनों ही चक्रवर्ती, तीर्थंकर व कामदेव थे और तीनों ही 16 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहे थे।
- मल्लिनाथ व नमिनाथ भगवान के गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान चारों कल्याणक मिथिलापुरी में ही हुए।
- वासुपूज्य भगवान के पाँचो कल्याणक चम्पापुरी में ही हुए।
- 7वें सुपार्श्वनाथ व 23 पार्श्वनाथ भगवान का वर्ण हरित था तथा दोनों का ही जन्म बनारस नगरी में हुआ।
- तीर्थंकरों के 5,3,2 कल्याणक हो सकते हैं, परन्तु भरत क्षेत्र में पाँच कल्याणक वाले तीर्थंकर ही होते हैं।
- तीर्थंकरों व उनके पिताओं के, बलदेव, चक्रवर्ती, अर्द्धचक्री, देवों के, भोगभूमिजों के आहार होता है किन्तु निहार नहीं होता है।
- तीर्थंकरों के दाढ़ी–मूछ नहीं होती परन्तु सिर पर बाल होते हैं।
- हुण्डावसर्पिणी काल दोष के कारण 7वें, 23वें, 24वें तीर्थंकरों पर उपसर्ग हुआ था।
- हुण्डावसर्पिणी काल दोष से ही तीसरे काल में ही प्रथम तीर्थंकर व प्रथम चक्रवर्ती उत्पन्न हुए।
- हुण्डावसर्पिणी काल दोष के कारण कई तीर्थंकरों का जन्म व मोक्ष स्थान अलग–अलग है जबकि सभी तीर्थंकरों की जन्मभूमि 'अयोध्या' व मोक्ष स्थली सम्मेद शिखर ही होती है।
- सभी तीर्थंकर 8 वर्ष की आयु में देशव्रती हो जाते हैं।
- तीर्थंकर प्रकृति का बंध तीनों वेद में संभव है परन्तु उदय केवल पुरुष वेद में ही होता है।
- सभी प्रकार की द्रव्य स्त्रियों में तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं होता।
- मिथ्यात्व के अभिमुख जीव ही तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट स्थिति बंध का स्वामी होता है।
- जिस भव में तीर्थंकर प्रकृति का बंध प्रारम्भ किया है उससे तीसरे भव में तीर्थंकर प्रकृति के सत्व युक्त जीवों के मोक्ष जाने का नियम है।

- मनुष्य गति में ही तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध प्रारम्भ होता है, अन्यत्र नहीं।
- तीर्थंकर प्रकृति का बंध निरन्तर है।
- तिर्यंच गति बिना तीनों गतियों में तीर्थंकर प्रकृति का बंध है।
- तीर्थंकर प्रकृति का उत्कृष्ट बंध–अन्तर्मुहूर्त व 8 वर्ष कम 2 कोटि पूर्व अधिक 33 सागर।
- अगर मनुष्यायु व तिर्यंचायु का बंध हो गया हो तो उसे तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध नहीं होगा और देव व नरकायु का बंध हो अथवा किसी भी आयु का बंध नहीं हुआ हो तो तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सकता है।
- प्रथमोपशम सम्यक्त्व को छोड़कर द्वितीयोपशम, क्षायोपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व में तीर्थंकर प्रकृति का बंध करता है क्योंकि प्रथमोपशम सम्यक्त्व का काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है।
- तीर्थंकर प्रकृति को बाँधने वाले सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्व को प्राप्त हो जाते हैं तो तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता के साथ तृतीय नरक तक उत्पन्न होते हैं।
- मिथ्यात्व गुणस्थान में आकर आहारकद्विक का उद्वेलन किया, फिर नरकायु का बन्ध किया फिर से असंयत गुणस्थान प्राप्त करके तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया, फिर दूसरी व तीसरी पृथ्वी में जाते समय मिथ्यादृष्टि हुआ। वहाँ जाकर पर्याप्ति पूर्ण करते ही नियम से मिथ्यात्व को छोड़कर सम्यग्दृष्टि हो जाता है।
- तीर्थंकर प्रकृति के सत्त्व वाले जीव के नरकायु के 6 महीने शेष रहने पर ही मनुष्यायु का बंध हो जाता है और नरक के उपसर्ग दूर हो जाते हैं।
- ऊपर की तीन पृथ्वियों से निकलकर व देव गति से निकलकर मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले मनुष्य को ही तीर्थंकरत्व उत्पन्न होता है। भवनवासी देव–देवियाँ, तिर्यंच, मनुष्य व चौथी आदि पृथ्वियों से आने वाले जीवों को नहीं होता।
- तीर्थंकर प्रकृति के बंधक जीव तीसरे नरक में भी मध्यम पटल से आगे नहीं जाते।

देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ,
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ।
यह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिव पंकति मचूँ,
अरहंत-श्रुत सिद्धान्त-गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

आठों दुखदानी, आठ निशानी, तुम ढिंग आनि निवारन हो।
दीनन निस्तारन, अधम उधारन, द्यानत तारन कारन हो।।

प्रभु अंतरयामी त्रिभुवन नामी सबके स्वामीदोष हरो।
मेरी अरज सुनीजै ढील न कीजै न्याय करी जै प्रभु दया करो।।

वसु विधि अरघ संजोय के, अति उछाह मनकीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम्परा अर्घ

परम्परा के नायक हैं जो, आदि सिन्धु आचार्य प्रवर,
महावीरकीर्ति गुरुवर, प्रज्ञा जिनकी बड़ी प्रखर।
विमल सिन्धु वात्सल्य दिवाकर, सन्मति सिंधु सूरि महान,
अर्घ चढ़ाऊँ सब गुरओं को, पा जाऊँ मैं शिवपुर धाम।।

ॐ हूँ प.पू. आचार्य श्री आदि-महावीर-विमल-सन्मतिसागर यतिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ

सूरज चाँद करें नित वंदन तीर्थंकर के लघु नंदन,
कुंदकुंद सा चारित जिनका पंचम युग के हैं भगवन।
विद्या वारिधि ज्ञान दिवाकर चरणों अर्घ करूँ अर्पण,
गुरुवर विरागसागर पद में शत-शत बार विनम्र नमन्।।

ॐ हूँ परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज की पूजन

पाद-प्रक्षालन

चलो गुरु चरण चलें-2, पाद प्रक्षाल करें-2
क्षीरोदधि का जल लेकर के, गुरु चरणों में आये हैं-2
चरणों की रज मस्तक धर के, अपने भाग्य सँवारे हैं-2
गुरु आशीष मिले, नई तकदीर बने, पाद-प्रक्षाल करें-2

स्थापना

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप के गुरुवर अधिकारी हो।
जिनवाणी को हृदय बसाकर इस जग के उपकारी हो।।
आह्वानन् कर आज गुरु को अपने मन पधराऊँगा।
हृदय कमल पर तुम्हें बिठाकर नितप्रति पूजा रचाऊँगा।।

मन मंदिर में आ बसो, तारण तरण जिहाज।
गुरु भक्ति से ही मिटें, भव-भव के संताप।।

ॐ हूँ प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवर! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि के निर्मल जल सम अपने मन को बना लिया।
तीर्थंकर का रूप धारकर जीवों को सन्मार्ग दिया।।
स्वर्ण कलश से जल की धारा गुरु चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. भक्तामर वाले बाबा उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की खुश्बू सम तुमने, रत्नत्रय को बिखराया।
तेरे चरणों की रज पाकर, भव आताप मिटा पाया।।
संसार ताप के नाश हेतु, गुरु चरणों चंदन अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्य: संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रतन को धारण करके, तीन लोक में पूज्य हुए।
सम्यग्ज्ञान दरश चारित पा, तीन लोक के भूप हुए।।
हे गुरु अक्षय निधि को पाने, अक्षत तुम्हें समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. पूजन शिविर प्रणेता आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मध्यान के फूल खिलाकर, सब जग को महकाया है।
ऐसा धर्म हृदय में पाने, मेरा मन ललचाया है।।
पारिजात मंदार आदि के, कुसम मनोहर अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. श्रमणरत्न आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन के विविध समूहों ने भी, तव मन को न डिगा पाया।
दृढ़ संकल्प के महामंत्र ने, जीवन पूज्य बना डाला।।
क्षुधा मिटाने गुरु चरणों में, लाडू बर्फी अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. वात्सल्यमूर्ति आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान का दीप जलाकर, निज स्वरूप का दर्श किया।
भव्य जीव को उसे बताकर, निज कर्तव्य को पूर्ण किया।।
रतन दीप की उज्ज्वल ज्योति गुरु चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. काव्य सम्राट आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

अष्ट कर्म को मूल नष्ट करने, का तुम संकल्प लिए।
आठ गुणों के पाने को तुम, शुक्लध्यान में लीन हुए।।
वसुकर्मों के नाश हेतु चरणों में धूप समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. भाषा विज्ञान पारंगत आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव बादाम आम को, देख न मन ललचाया है।
अंतराय को दूर भगाने, तुमने कदम बढ़ाया है।।
उत्तम फल को पाने गुरुवर, फल चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. सिद्धान्तज्ञ आचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कर में ले, पुष्प चरु हैं मिलवाए।
ज्ञान दीप का थाल सजाकर, अष्ट द्रव्य फल सजवाए।।
अनर्घ पद के हेतु हे गुरुवर! मेरा अर्घ समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ-सौ जीवन गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ हूँ प.पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

आओ हम गायें गुणमाला, गुरुवर कृपा विधान की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्...4

छत्तीस गुणों से मंडित होकर शिष्यों के ये ईश्वर हैं।
यंत्र रूप हैं, मंत्र रूप हैं, तंत्र रूप भी परिणत हैं।।
ऐसे गुरु को वंदन करते मिले राह कल्याण की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्...4

दश धर्मों के डिब्बे लेकर, मोक्ष की ट्रेन चलाते हैं।
भव्य जनों को बैठा करके, मोक्षपुरी पहुँचाते हैं।।
गुरु के नाम मंत्र की माला, जपो सभी सद्ज्ञान की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्...4

बारह तप को नितप्रति तपकर जीवन को चमकाया है।
कुन्दन जैसी काया गुरु की, भव्यों को मन भाया है।।
रहे ध्यान में लीन सदा और जाप जपें प्रभु नाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्...4

तीन गुप्ति और पाँच समिति को चर्या में दर्शाया है।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का जिनने बिगुल बजाया है।।
स्व-पर भेद उपकार करें जो चलें राह शिवधाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्...4

भक्तामर को शुद्ध पढ़ाकर, पूजन करना सिखलाते।
जीवन के अनसुलझे प्रश्नों को भी गुरुवर सुलझाते है।।
ऐसे गुरु के गुण गाएं हम, जाप जपें गुरु नाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्...4

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो जयमालाये अनर्घपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणानुरागी बन गुरो गाऊँ हर पल गान।
गुण को पाने के लिऐ करूँ विनम्र प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिक्षिपामि)

परिचय के गवाक्ष में गुरुवर...

* ''परम पूज्य गुरुदेव'' जिनशासन का वह दैदीप्यमान नक्षत्र हैं जिन्होंने अल्पवय में ही उच्च (स्नातकोत्तर) शिक्षा के माध्यम से डिस्ट्रिक्ट् टॉप किया एवं 8 वर्ष तक प्रोफेसर के पद को सुशोभित किया तथा संसार की असारता को जानकर, इन सभी का त्याग किया।
* ''पूज्य उच्चारणाचार्य गुरुवर'' जिन्होंने बुंदेलखण्ड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड आदि के अनेक नगरों में पद विहार कर लाखों आबालवृद्ध भव्यात्माओं को शुद्ध उच्चारण सहित भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मंदिर, सामायिक आदि के अनूठे शिविर लगाकर उनके गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित किया। जिसे सुन विद्वत वर्ग ने ''उच्चारणाचार्य'' की उपाधि से विभूषित किया तथा समाज व भक्त समूह ने ''भक्तामर वाले बाबा'' के नाम से विख्यात किया। पूज्यवर ने भक्तामर स्तोत्र को 12 प्रकार से पद्यानुवादित किया एवं अनेक स्तोत्रों व ग्रंथों का पद्यानुवाद किया।
* ''पूज्य भक्तामर वाले बाबा'' जिन्होंने अंग्रेजी में ऐसे णमोकार मंत्र की रचना की जिसे मूल गाथा की तरह ही लयबद्ध गाया जा सकता है साथ ही मंगल, उत्तम शरण को भी अंग्रेजी में गाया है यह रचना ''ना भूतो न भविष्यति'' को चरितार्थ करती है। गुरुदेव ने कई भजनों व स्तोत्रों की रचना अंग्रेजी में की है।
* ''काव्य सम्राट् गुरुवर'' जिन्होंने ''जीवन है पानी की बूँद'' भजन के 5100 से भी अधिक छंद रचकर महाकाव्य का रूप देकर जनसमूह तक पहुँचाकर विश्वविख्यात किया, जिसमें आगम व अध्यात्म का सार झलकता है। गुरुदेव की इस रचना पर कई आचार्य, मुनि, आर्यिकाओं, विद्वतजन व संगीतकारों ने अनेक भजन बनाए हैं।
* ''श्रमण रत्न पूज्य गुरुवर'' जिन्होंने अक्षय शाश्वत गिरिराज सम्मेदशिखर की संघ सहित 1515 वंदना कर नया कीर्तिमान स्थापित किया।
* ''शिविर प्रणेता गुरुवर'' जिन्होंने लाखों लोगों को पूजन शिविर के माध्यम से जिनेन्द्र प्रभु का पुजारी बनाया। गुरुवर का स्वप्न है घर-घर में भक्तामर व पूजन भक्ति के स्वर गुँजायमान हों।
* ''कवि हृदय गुरुवर'' ऐसे शिष्य हैं जिन्होंने गुरु कृपा और स्वयं की प्रतिभा के द्वारा सैकड़ों भजन, सैकड़ों गज़ल, कविताएँ, सूक्तियाँ, मुक्तक, शेर, पहेलियाँ आदि की रचना अपनी लेखनी से की है।
* ''पूज्यवर उच्चारणाचार्य'' जिनके शब्द साकार हो जाते हैं जिनके कंठ व लेखनी में सरस्वती का वास है। जिन्हें संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, प्राकृत, ऊर्दू आदि भाषाओं में दक्षता प्राप्त है।
* ''पूज्य सिद्धान्तज्ञ गुरुवर'' ऐसे संत हैं जिन्होंने वीरसेन स्वामी जी की छवि को दर्शाते हुए ''सिद्धांत प्रबोधिनी टीका'' (चौंतीस स्थान दर्शन) नामक एक अनूठे ग्रंथ की मौलिक रूप से प्राकृत भाषा में रचना कर अनेकों भव्य श्रुतानुरागी जीवों पर उपकार किया है।
* ''पूज्य भक्तामर वाले बाबा'' का भक्तामर व आचार्य मानतुंग जी के प्रति ऐसा लगाव बन गया है कि बरबस ही लेखनी चल पढ़ी और संस्कृत में ''भक्ति प्रबोधिनी टीका'' (भक्तामर टीका) का सृजन हो गया व ''कल्याण प्रबोधिनी टीका'' (कल्याण मन्दिर टीका) पर गुरुदेव की लेखनी चल रही है।
* ''पूज्य गुरुवर ऐसे प्रथमाचार्य हैं'' जिन्होंने गुरुवर आचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा रचित सर्वोदया (संस्कृत टीका) टीका का अंग्रेजी में अनुवाद किया। Phylosophy of Karma, Moral Science for Children Part I, II, III की रचना की है।
* ''विराग के चिराग गुरुवर'' जो पंथ से दूर केवल निर्ग्रन्थ, अद्भुद् शब्द विज्ञान के धनी, सरल-सहज-सौम्य-विनम्र स्वभाव वाले, नय-न्याय-सिद्धांत-अध्यात्म आगम के पारगामी, तर्कशक्ति में अव्वल यथा नाम तथा गुण को सार्थक करने वाले हैं।

''यूँ तो गुरुवर के सिर पर कोई ताज नहीं।
पर यहाँ कौन सा दिल है जिस पर गुरुवर का राज नहीं।।''

Learn to live by bending so that the blessed hands of others can easily reach your head because the bucket that tils in the well, it comes full, it is the mathematics of life, the one who tilts gets everything.

साभार-

उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

कृत

"सच्ची बात"

भाग-1

गुरुदेव की सार्वभौमिक सत्य रचना

जहाँ पर पक्ष होता है, वहीं पर पंथ होता है,
उठा जो पंथ से ऊपर, वही निर्ग्रन्थ होता है।
हटाये राग द्वेषों को, बना है वीतरागी जो,
वो सच्चा संत ही इकदिन, यहाँ अरहन्त होता है।।

JYOTI GRAPHICS, JAIPUR
M. 8290526049, 8619727900